वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

नवम्बर 01-15, 2025

जनजातीय समाज के गौरव

भगवान बिरसा मुंडा

नई दिल्ली में 'हिंदू समाज के पारंपरिक व्यवसायों को पुनर्जीवित करने का प्रेरक उपक्रम 'THE HINDU केश एवं सज्जा' कार्यक्रम'' को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

पुष्करराज-राजस्थान में विहिप-धर्मप्रसार विभाग के अ.भा. निधि प्रमुखों तथा न्यासियों की बैठक में धर्मप्रसार के अ.भा. पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी

गत दो वर्षों से धर्मप्रसार विभाग अजमेर-राजस्थान के तत्वावधान में श्री हनुमत् शक्ति जागरण समिति द्वारा अनवरत जारी सुंदरकाण्ड पाठ के अवसर पर उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी

फिजी में सम्पन्न पांचवे राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन में फिजी के परिषद पदाधिकारियों के साथ उपस्थित विहिप संयुक्त महामंत्री (विश्व समन्वय) स्वामी विज्ञानानंद जी महाराज

जयपुर (राज.) में गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद की अ.भा. बैठक में उपस्थित गोरक्षा विभाग के अ.भा. पदाधिकारी तथा देशभर से पधारे गोभक्त कार्यकर्ता

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे गौओं ! आप अन्न के कारण रूप हैं। आपकी कृपा से हम दुग्ध, घृतादि रूप पोषक अन्न का सेवन करें। आप पूज्य हैं। हम आप से पूज्यत्व अथवा प्रसिद्धि प्राप्त करें। आप बलवान् हैं। हम आपकी कृपा से बलयुक्त हों। आप धन-पुष्टिरूप है। हम आपकी कृपा से धन-धान्यादि पोषण प्राप्त करें। – यजुर्वेद

01-15 नवम्बर, 2025

कार्तिक शुक्ल - मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

वैचारिक विमर्श और भारतीय दृष्टिकोण	08
समाज सहयोग से संघ शताब्दी यात्रा सुगम बनी	09
100 वर्ष की संघ यात्रा	10
राष्ट्र साधना के 100 वर्ष	11
विश्व हिन्दू परिषद के विभिन्न आन्दोलन	13
संयुक्त राष्ट्र महासभा में अमेरिका, पाकिस्तान और बाँग्लादेश का झूठ भारत ने की तथ्यों और तर्कों से धुलाई	15
शक्ति के उपासक बनें	17
स्वदेशी एवं स्वावलम्बन ही नये भारत का आधार	19
दीर्घ आयु प्राप्त करने का शास्त्र है आयुर्वेद	21
द हिन्दू केश एवं सज्जा' का शुभारंभ	22
अवैध धर्मांतरण के विरुद्ध कठोर कानून के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान घोषित	23
गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद की अखिल भारतीय बैठक	24
मंदिरों का धन देवता का, सरकार का नहीं	26

सुभाषित

नास्ति गंगासमं तीर्थं, नास्ति विष्णुसमः प्रभुः।
नास्ति शम्भुसमः पूज्यो, नास्ति मातृसमो गुरुः।।

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं, विष्णु के समान कोई प्रभु नहीं और शिव के समान कोई पूज्य नहीं तथा माता के समान कोई गुरु नहीं।

हलाल प्रमाणन
धर्म के नाम पर आर्थिक साम्राज्य का जाल

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है – यहाँ प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म के अनुसार जीवन जीने, पूजा करने और भोजन करने की स्वतंत्रता है। परंतु जब किसी धर्म के आचार–विचार के नाम पर देश की अर्थव्यवस्था, व्यापारिक संरचना और उपभोक्ता की स्वतंत्रता पर सुनियोजित नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास हो, तो यह केवल धार्मिक परंपरा नहीं रहती – यह राष्ट्र की सुरक्षा, सामाजिक समरसता और आर्थिक स्वावलंबन के लिए चुनौती बन जाती है। आज "हलाल प्रमाणपत्र" का यही स्वरूप हमारे सामने खड़ा है।

"हलाल" का अर्थ केवल इस्लामिक दृष्टि से 'अनुमेय' वस्तु या भोजन है। मूलतः यह मुसलमानों की आस्था से जुड़ा था कि वे केवल वही मांस या उत्पाद उपयोग करें, जो शरीयत के नियमों के अनुसार तैयार हुआ हो। किंतु अब इसका दायरा केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रहा। हलाल प्रमाणन का जाल भारत में इतना फैल चुका है कि आज मांस के साथ–साथ दवाइयाँ, सौंदर्य प्रसाधन, खाद्य तेल, टूथपेस्ट, यहाँ तक कि भवन–निर्माण सामग्री और आभूषणों तक में 'हलाल' की मुहर लगाई जा रही है। यह केवल "विश्वास" का विषय नहीं, बल्कि एक आर्थिक तंत्र का निर्माण है – जिसमें अरबों रुपये की वसूली धार्मिक ट्रस्टों के माध्यम से की जा रही है।

योगी आदित्यनाथ जी ने हाल ही में जो कहा कि "हलाल प्रमाणन के नाम पर जुटाया गया धन आतंक और धर्मांतरण में लगाया जा रहा है" – वह भावनात्मक नहीं, बल्कि सुरक्षा रिपोर्टों पर आधारित यथार्थ है। विभिन्न राज्यों की खुफिया एजेंसियों और एटीएस की जांचों में यह तथ्य सामने आया है कि कुछ इस्लामिक संस्थाएँ, जो हलाल प्रमाणपत्र जारी करती हैं, वे विदेशी फंडिंग से संचालित हैं और उनकी आय का बड़ा भाग गैर–पारदर्शी ट्रस्टों तथा एनजीओ के माध्यम से धार्मिक विस्तार में खर्च किया जा रहा है।

जांचों में यह भी पाया गया है कि हलाल प्रमाणन से प्राप्त लाभांश का उपयोग न केवल धर्मांतरण अभियानों में, बल्कि "लव जिहाद" जैसे षड्यंत्रों को वित्तीय बल देने में किया गया है। कई धर्मांतरण मामलों में प्रयुक्त प्रचार–सामग्री, परिवहन–व्यवस्था और प्रशिक्षकों के मानदेय का स्रोत यही धार्मिक ट्रस्ट बताए गए। यही नहीं, जब ऐसे मामलों में अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई हुई, तो उन्हीं ट्रस्टों से संबंधित फंड से वकीलों की मोटी फीस चुकाई गई, ताकि अपराध को "धर्म की रक्षा" का रूप दिया जा सके। यह आर्थिक तंत्र कानून से बचने और न्याय व्यवस्था को प्रभावित करने का माध्यम बन चुका है।

भारत में Halal India Pvt- Ltd. Jamiat Ulema-e-Hind Halal Trust, Halal Council of India जैसी संस्थाएँ बिना किसी वैधानिक स्वीकृति के कंपनियों से शुल्क लेकर प्रमाणपत्र जारी करती हैं। न तो इन संस्थाओं पर किसी सरकारी नियंत्रण का प्रावधान है, न ही इनकी फंडिंग का सार्वजनिक लेखा–जोखा। हर उत्पाद पर 'हलाल' की मुहर लगाने के लिए कंपनियाँ इन संस्थाओं को लाखों–करोड़ों रुपये देती हैं – और यह धन कहाँ जाता है, इसका कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। यदि यही कार्य किसी अन्य धर्म या संगठन द्वारा किया जाता, तो अब तक इसे "आर्थिक सांप्रदायिकता" कहा जा चुका होता।

हलाल प्रमाणन का असली उद्देश्य अब धर्म के पालन से कहीं अधिक आर्थिक वर्चस्व स्थापित करना प्रतीत होता है। यह एक "समानांतर शरीयती अर्थव्यवस्था" है, जो भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में "अवैधानिक आर्थिक बाधा" बनती जा रही है। बड़ी–बड़ी कंपनियाँ बाजार दबाव में हलाल सर्टिफिकेट लेने को बाध्य हैं, जिससे हिन्दू व्यापारियों, कसाइयों और उत्पादकों के लिए आर्थिक अवसर सिमट रहे हैं। यही कारण है कि यह मुद्दा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि "आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक अतिक्रमण" का प्रश्न बन चुका है। हलाल प्रमाणन का प्रश्न केवल उपभोक्ता का नहीं, राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। यदि समय रहते इस षड्यंत्र को न रोका गया, तो भारत के भीतर भारत की समानांतर अर्थव्यवस्था तैयार हो जाएगी – जो हमारे संविधान, संस्कृति और सामाजिक एकता – तीनों के लिए घातक सिद्ध होगी।

हलाल प्रमाणन का मुद्दा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि 'आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक अतिक्रमण' का प्रश्न बन चुका है। हलाल प्रमाणन का प्रश्न केवल उपभोक्ता का नहीं, राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। यदि समय रहते इस षड्यंत्र को न रोका गया, तो भारत के भीतर भारत की समानांतर अर्थव्यवस्था तैयार हो जाएगी – जो हमारे संविधान, संस्कृति और सामाजिक एकता – तीनों के लिए घातक सिद्ध होगी।

जनजातीय गौरव भगवान बिरसा मुंडा

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

भगवान झूलेलाल के बाद भारत की धरती पर जो भगवान हुए, वो हैं, भगवान बिरसा। भगवान झूलेलाल को वरूणावतार कहा जाता है, लेकिन भगवान बिरसा तो जनजातीयों के ऐसे भगवान हैं, जिनका कोई मूल ही पता नहीं लगा पाया। बिरसा वस्तुतः अमूल्य धरोहर हैं भारत के। मिशनरीज वालों ने बिरसा की थाती को अपनाकर जनजातीयों को धोखा देने के अनेक प्रयत्न किया, लेकिन बिरसा के तेज के आगे मिशनरीज न तब टिक पाये थे और न ही अब। बिरसा ने अपना ऊलगुलान मिशनरियों के अत्याचार और छल अधारित अवैध धर्मांतरण के विरुद्ध आरम्भ किया था। उन्होंने मिशनरियों को सिरे से नकारा तथा जनजातियों के अवैध धर्मांतरण के विरुद्ध सशक्त आंदोलन चलाया। भगवान बिरसा मुंडा ने अपनी 8 वर्ष की आयु में मिशनरीज द्वारा झूठ बोलकर भोले–भाले जनजातीय बच्चों का धर्मांतरण करने के कर्म का विरोध किया और उसी बाल्यकाल में मिशन का विद्यालय छोड़ दिया। ऐसी मिथ्या शिक्षा का विरोध तो हर विद्यार्थी को करना चाहिए।

जनजातीय गौरव दिवस

भारत की समृद्ध साँस्कृतिक विविधता में बहुत स्तर तक इसके जनजातीय समुदायों का योगदान शामिल है, जिन्होंने राष्ट्र के इतिहास और विकास के सफर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हर साल 15 नवंबर को, इन समुदायों के योगदान, खासकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को सम्मानित करने के लिए जनजातीय गौरव दिवस मनाया जाता है। यह दिन जनजातीय नेता और स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के दिन मनाया जाता है, जिनकी विरासत आज भी हमें प्रेरित करती है। यह दिन, भारत की विरासत को संरक्षित करने और इसकी प्रगति को आगे बढ़ाने में जनजातीय समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है।

पीएम मोदी की अनभिव्यक्ति जनजाति गौरव पर
भगवान बिरसा मुंडा ने हमें सिखाया कि हमें कैसे अपने परिवेश के साथ सद्भाव की भावना के साथ रहना है और अपनी संस्कृति पर गर्व करना है। उनसे प्रेरित होकर, हम उनके सपनों को पूरा करने और हमारे आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

बिरसा मुंडा के नेतृत्व में उलगुलान (क्रांति)

जैसे ब्रिटिश शासन के खिलाफ आदिवासी आंदोलन, न केवल ब्रिटिश अत्याचार को चुनौती देने की दिशा में बेहद महत्वपूर्ण थे, बल्कि इसने राष्ट्रीय जागृति को भी प्रेरित किया। आदिवासी समुदायों द्वारा भगवान के रूप में पूज्यनीय बिरसा मुंडा ने शोषणकारी औपनिवेशिक व्यवस्था के खिलाफ एक उग्र आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसके चलते 15 नवंबर को उनकी जयंती, आदिवासी नायकों का सम्मान करने का एक उचित अवसर बन गया।

मूल निवासी दिवस

प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को विश्व के मूलनिवासी लोगों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है। यह अंतरराष्ट्रीय षड्यन्त्र है, यह समझाने के लिए कि तुम मूल निवासी हो और शेष सभी लोग विदेशी हैं और उन्हें मार भगाओ। जिन देशों के लोंगों ने अपने यहाँ के मूल निवासियों को, जिन्हें जंगलों में खदेड़कर उन देशों पर कब्जा जमाये बैठे हैं, वहाँ के मूल निवासियों को अबतक सामान्य नागरिकों जैसा अधिकार भी नहीं दिया, वो हमारे देश में आकर मूल निवासी दिवस के नामपर यहाँ के समाज में फूट डालने का प्रयत्न करते हैं। इस मूल निवासी दिवस से भारत के जनजातियों का कोई सम्बन्ध नहीं है। भारत के जनजातियों ने इस फर्जी दिवस को अपनाया नहीं, लेकिन 2021 में जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 नवम्बर को,

जो भगवान बिरसा मुंडा का जन्म दिवस है, के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस का आवाहन किया, तो पुरे देश न इस दिवस को पलक झंपकते ही अपना लिया। कारण भगवान बिरसा को सब लोग जानते हैं और उनके व्यक्तित्व और कतृत्व के कारण उन्हें अपना मानते भी हैं।

जन्म

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को तत्कालीन बंगाल प्रेसीडेंसी के राँची जिले में, जो अब झारखंड के खुंटी जिले में है, के गाँव उलीहातू में हुआ था।

बचपन और परिवार

उनकी माता का नाम करमी हातू, पिता का नाम सुगना मुंडा था। बड़ा भाई कोमता मुंडा। बड़ी बहन चंपा मुंडा। एक और बड़ी बहन दासकिर मुंडा। छोटा भाई पसना मुंडा। बिरसा का परिवार बाद में उलीहातू छोड़कर बिरबंकी के पास कुरुम्बदा में मजदूरी करने चला गया। कुरुम्बदा में ही बिरसा के बड़े भाई कोमता और उनकी बहन दासकिर का जन्म हुआ। वहाँ से परिवार बम्बा चला गया जहाँ बिरसा की बड़ी बहन चंपा का जन्म हुआ। बिरसा के प्रारंभिक वर्ष चल्कद गाँव में अपने माता–पिता के साथ बीते। गरीबी के कारण बिरसा को उनके मामा के गाँव अयुभातु ले जाया गया। बिरसा दो साल तक अयुभातु में रहे। बिरसा कुछ समय अपनी मौसी के घर भी रहे। वह साल्गा में जयपाल नाग की स्कूल में गए।

बिरसा का संगीत प्रेम

बिरसा मुंडा जंगल में बकरी चराते हुए समय व्यतीत करने के लिए बाँसुरी बजाया करते थे और कुछ दिनों में ही बाँसुरी बजाने में उस्ताद हो गये थे। उन्होंने कद्दू से एक एकतार वाला वादक यंत्र तुइला बनाया था, जिसे भी वो बजाया करते थे। उनके जीवन के कुछ रोमांचक पल गाँव में अखारा में भी बीते थे।

मिशन से सम्पर्क

वह एक ईसाई मिशनरी के संपर्क में आए, जिन्होंने गाँव के कुछ परिवारों का दौरा किया, जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे। बिरसा मुंडा समझ गए कि ईसाई मिशनरी आदिवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर रहे हैं। चूँकि बिरसा पढ़ाई में तेज थे, जयपाल नाग ने उन्हें जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ने का सुझाव दिया, वहाँ जाकर मिशनरीज स्कूल के दबाब में बिरसा ने ईसाई धर्म अपना लिया और उनका नाम बदलकर बिरसा डेविड रखा गया, जो बाद में बिरसा दाउद हो गया। कुछ साल पढ़ाई करने के बाद उन्होंने जर्मन मिशन स्कूल छोड़ दिया। बाद में चाईबासा के लूथरन मिशन स्कूल में नामांकन हुआ।

ईसाई धर्म का परित्याग– घरवापसी

1886 से 1890 तक बिरसा का चाईबासा प्रवास उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण काल था। यह काल जर्मन और रोमन कैथोलिक ईसाई आंदोलन से प्रभावित था। स्वतंत्रता संग्राम की सुगबुगाहट पाकर, सुगना मुंडा ने अपने बेटे को स्कूल से निकाल लिया। 1890 में चाईबासा छोड़ने के तुरंत बाद, बिरसा और उनके परिवार ने जर्मन मिशन की सदस्यता त्याग दी, ईसाई धर्म त्याग दिया और अपनी मूल पारंपरिक आदिवासी धार्मिक व्यवस्था में लौट आए।

बिरसा की मिशन से बगावत

उनके पिता, चाचा, ताऊ सभी ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। बिरसा के पिता 'सुगना मुंडा' जर्मन धर्म प्रचारकों के सहयोगी भी थे। परन्तु स्कूलों में उनकी आदिवासी संस्कृति का जो उपहास किया जाता था, बिरसा को मिशन के विद्यालय में गोमांश खाने को विवश होना पड़ा, यह सब बिरसा को सहन नहीं हुआ। इस पर उन्होंने भी पादरियों का और उनके धर्म का भी मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। फिर क्या था। ईसाई धर्म प्रचारकों ने उन्हें स्कूल से निकाल दिया।

स्वामी आनंद पाण्डेय से सम्पर्क

बिरसा के जीवन में एक नया मोड़ स्वामी आनन्द पाण्डे से सम्पर्क में आने के बाद आया। जब उन्हें हिन्दू धर्म तथा महाभारत के पात्रों का परिचय मिला। कहा जाता है कि 1895 में कुछ ऐसी आलौकिक घटनाएँ घटीं, जिनके कारण लोग बिरसा को भगवान का अवतार मानने लगे। लोगों में यह विश्वास दृढ़ हो गया कि बिरसा के स्पर्श मात्र से ही रोग दूर हो जाते हैं। इससे बिरसा को अपने प्रभाव में वृद्धि करने में मदद मिली। लोग उनकी बातें सुनने के लिए बड़ी संख्या में एकत्र होने लगे। उस समय बिरसा ने पुराने अंधविश्वासों का खंडन किया। लोगों को हिंसा और मादक पदार्थों से दूर रहने की सलाह दी। उनकी बातों का प्रभाव यह पड़ा कि ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों की सँख्या तेजी से घटने लगी और जो मुंडा ईसाई बन गये थे, वे फिर से अपने पुराने धर्म में लौटने लगे।

जंगल पर सरकारी अधिकार

पोड़याहाट में सरकार ने सुरक्षित वन घोषित कर दिया था, जिसको लेकर आदिवासियों में काफी आक्रोश था और लोग सरकार के खिलाफ आंदोलन करने लगे।

जब खुद को बताया 'धरती आबा'

आंदोलन की गति धीमी थी और बिरसा भी इस आंदोलन में कूद गए। बिरसा ने एक दिन घोषणा की कि वह पृथ्वी पिता यानी 'धरती आबा' है। उनके अनुयायियों ने भी इसी रूप को माना। एक दिन उनकी माँ उनका प्रवचन सुन रही थी। माँ ने उसे बिरसा बेटा कहकर पुकारा।

भगवान बिरसा मुण्डा के उपदेश का सार

1) ईश्वर याने सिंगबोंगा
2) गौ की सेवा करो एवं समस्त प्राणियों के प्रति दयाभाव रखो
3) नशा मत करो, अशुद्ध भोजन मत करो
4) सादा रहो, घर साफ–सुथरा रखो, अपने घर में तुलसी का पौधा लगाओ।
5) बड़ों का आदर करो, कुसंगति से बचो
6) इसाईयों के मोह जाल में मत फंसो
7) पर धर्म से अच्छा स्व–धर्म है
8) अपनी संस्कृति, धर्म और अपने पूर्वजों के प्रति अटूट श्रद्धा रखो
9) धर्म/संस्कृति, परम्परा को भूलने से समाज की पहचान मिटती है
10) एकजूट रहो, कभी आपस में मत लड़ो
11) सप्ताह में एक दिन बृहस्पतिवार को सिंगबोंगा (भगवान) की पूजा करो, हल मत चलाओ

बिरसा ने कहा, वह 'धरती आबा' है और अब उसे इसी रूप में संबोधित किया जाना चाहिए। जब ब्रिटिश सत्ता ने 1895 में पहली बार बिरसा मुंडा को गिरफ्तार किया, तो धार्मिक गुरु के रूप में मुंडा समाज में स्थापित हो चुके थे। दो साल बाद जब रिहा हुए, तो अपने धर्म को मुंडाओं के समक्ष रखना शुरू। आगे चलकर धार्मिक सुधार का यह आंदोलन भूमि संबंधी राजनीतिक आंदोलन में बदल गया। छह अगस्त 1895 को चौकीदारों ने तमाड़ थाने में यह सूचना दी कि 'बिरसा नामक मुंडा ने इस बात की घोषणा की है कि सरकार के राज्य का अंत हो गया है।' इस घोषणा को अँग्रेज सरकार ने हल्के में नहीं लिया। वह बिरसा को लेकर गंभीर हो गई।

क्यों हुआ था 'उलगुलान' आंदोलन

बिरसा मुंडा के नेतृत्व में 1889–1900 में उलगुलान आंदोलन हुआ था, जिसका अर्थ है महाविद्रोह। इसका आरम्भ सिंहभूम के संकरा गाँव से हुई थी, यह विद्रोह मिशनरीज और अँग्रेजी सरकार के विरुद्ध था। बिरसा ने मुंडा आदिवासियों को जल, जंगल की रक्षा के लिए प्रेरित किया। इसके लिए उन्होंने उलगुलान नाम से एक आंदोलन की शुरुआत की। यह अँग्रेजी शासन और मिशनरियों के खिलाफ था, जिसका मुख्य केंद्र खूंटी, तमाड़, सरवाडा और बंदगांव में थे। इसके पीछे उनका उद्देश्य आदर्श भूमि व्यवस्था को लागू करना था। यह तभी संभव था, जब अँग्रेज अफसर और मिशनरी के लोग पूरी तरह हट जाएँ। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने लगान माफी के लिए आंदोलन की शुरुआत की, जिससे जमींदारों के घर से लेकर भूमि का कार्य रुक गया। इस आंदोलन का असर ये हुआ कि अँग्रेजों ने आदिवासियों को उनकी ही जमीन के इस्तेमाल पर रोक लगा दी। जमींदार उनकी जमीन हथियाने लगे थे। जिसे पाने के लिए मुंडा समुदाय के लोगों ने आंदोलन की शुरुआत की जिसे "उलगुलान" का नाम दिया गया। अंत में अँग्रेजों ने चक्रव्यूह रचकर बिरसा मुंडा को धोखे से गिरफ्तार कर लिया गया।

बिरसा मुंडा से जुड़ी अनोखी बातें

- भारतीय संसद के संग्रहालय में भगवान बिरसा मुंडा की तस्वीर लगी हुई है। ये सम्मान जनजातीय समुदाय में अब तक केवल बिरसा मुंडा को ही मिल सका है।
- बिरसा मुंडा और उनके परिवार ने इसाई धर्म को अपनाया था। जिसके बाद बिरसा मुंडा का नाम बदलकर 'दाऊद मुंडा' रखा गया था।
- बिरसा मुंडा ने 1895 में 'बिरसाइत' धर्म की स्थापना की थी। जिसके बाद बड़ी सँख्या में लोग बिरसाइत धर्म से जुड़े थे।
- बिरसा मुंडा ने 'मुंडा विद्रोह' समेत कई आंदोलनों का नेतृत्व किया।
- बिरसा मुंडा के किसी अपने ने ही 500 रुपये के लालच में उनके गुप्त ठिकाने की जानकारी प्रशासन को दे दी थी। जिसके बाद उन्हें गिरफ्तार किया गया था।
- बिरसा मुंडा को पश्चिमी सिंहभूम जिले के बंदगांव से गिरफ्तार कर खूंटी के रास्ते राँची जेल लाया गया था।
- राँची जेल में 'हैजा' बीमारी की चपेट में आने से बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गयी थी।
- कुछ इतिहासकारों का कहना है कि अँग्रेज जानते थे बिरसा मुंडा जेल से छूटने के बाद विद्रोह को वृहत रूप देंगे और तब यह अँग्रेजों के लिए और घातक होगा। इसलिए उन्होंने उनके दातुन/पानी में विषैला पदार्थ मिला दिया। जिससे उनकी मृत्यु हो गई।
- राजधानी राँची स्थित कोकर में डिस्टिलरी पुल के पास भगवान बिरसा मुंडा का समाधि स्थल है।

मृत्यु

ब्रिटिश सरकार ने उन्हें धोखे से गिरफ्तार कर लिया था। ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों के अनुसार उनकी मृत्यु 9 जून 1990 को राँची सेन्ट्रल जेल में कॉलरा की बीमारी से हुआ था। कहा जाता है कि शायद उन्हें विष दे दिया गया था। लेकिन लोक गीतों और स्थानीय साहित्य में बिरसा मुंडा आज भी जीवित हैं।

वैचारिक विमर्श और भारतीय दृष्टिकोण

– सत्येन्द्र सिंह

देश की स्वतंत्रता के लिए भारतीय लोगों ने स्व विचारधारा, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वशासन के लिए लम्बे समय तक संघर्ष किया। हजारों वर्षों के गुलामी के प्रभाव से देश में क्षेत्रवाद, भाषावाद, छुआछूत, अलगाववाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, धर्मांतरण आदि अनेकों प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हुई। अँग्रेजों के आने के पूर्व देश आर्थिक, शैक्षणिक, साँस्कृतिक, सामाजिक, प्रसाशनिक दृष्टि से काफी मजबूत था। राष्ट्र और राष्ट्रीयता का विचार अनादि काल से रहा है। भारत सदियों तक समृद्ध होने के साथ ही ज्ञान का स्रोत रहा है।

इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर श्री अरविंदो और महात्मा गाँधी ने सर्वोदय, स्वराज और स्वदेशी के विचार के साथ देश का नेतृत्व किया। आजादी के अमृत काल में सामाजिक और सामूहिक शाश्वत के आधार पर फिर से स्वविचारधारा एवं स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व बलिदान देने वाले गुमनाम नायकों को देश एवं समाज के सामने लाने को एक महान अवसर है।

आज देश में अनेकों विभाजनकारी एवं झूठा विमर्श फैलाये जा रहे हैं। अलगाववाद बढ़ाने के लिए विशिष्ट पहचान, अलग–अलग कोड, आत्मनिर्णय, स्व अधिकार आदि की मांग के लिए आंदोलन हो रहे हैं। यह आंदोलन भारतीय संविधान को कमजोर करने और देश में फूट पैदा करने का एक राष्ट्र विरोधी षड्यंत्र है। पश्चिमी सँस्कृति की विविधता को देखने का नजरिया विभाजनकारी है, जबकि भारत ने सदियों से भाषायी, साँस्कृतिक, धार्मिक विविधता के साथ सभी समुदायों को शांति व सह अस्तित्व के साथ रहने का वातावरण प्रदान किया है। आज भारत के कई राज्यों एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित राज्यों में नई पहचान के संकट को खड़ा करने के लिए षड्यंत्र जारी है। भारत का संविधान अंतिम पंक्ति में खड़े हर व्यक्ति और समाज को अधिकार संपन्न बनाकर भारत के समृद्ध समाज के बराबर खड़ा होने का अवसर प्रदान करता है, जिसके बीज में समता, समरसता एवं बंधुत्व का भाव अंतर्निहित है।

आज देश में आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा, गाँव–गाँव एवं नगर – नगर में मूलभूत संरचना, सुशासन, समरसता, स्वदेशी भाव, पर्यावरण संरक्षण, व्यक्ति – परिवार – समाज में स्व संस्कार का होना आवश्यक है। विवेक, विचार और कर्म में संतुलन बनाकर व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक संकल्प लेने की आवश्यकता है कि हम सांगठनिक एकत्व भाव से किसी भी विशिष्ट पहचान के जरिए अलगाववाद उत्पन्न करने की संभावना को दृढ़ता के साथ समाप्त करने में सक्षम होंगे।

देश में 705 प्रकार से ऊपर जनजातियाँ हैं और सभी के अपने–अपने रीति रिवाज हैं। धार्मिक, सामाजिक, साँस्कृतिक प्रथाओं और सनातन (हिंदू) धर्म के बीच प्रकृति पूजा, पंचभूत पूजा अतिथि देवो भव, सर्वे भवन्तु सुखिनः – सर्वे संतु निरामया, वसुधैव कुटुम्बकम् की तरह कई समानताओं के कारण जनजाति समाज सनातन धर्म का अभिन्न अंग है। जनजाति समाज विशाल हिंदू सँस्कृति के मुख्य स्तंभ हैं। यही भारतीय दृष्टिकोण है। भारतीय दृष्टिकोण शास्वत है, इसे मजबूती के साथ समाज में बोलने एवं रखने की आवश्यकता है, निश्चित है भारत विश्व में परम वैभव के स्थान पर सुशोभित होगा।

(लेखक झारखण्ड की खरवार जनजाति से हैं और वर्तमान में वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष है।)

समाज सहयोग से संघ शताब्दी यात्रा सुगम बनी

दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य को अभी सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस सौ वर्ष की यात्रा में कई लोग सहयोगी और सहभागी रहे हैं। यह यात्रा परिश्रम पूर्ण और कुछ संकटों से अवश्य घिरी रही, परंतु सामान्य जनों का समर्थन उसका सुखद पक्ष रहा। आज जब शताब्दी वर्ष में सोचते हैं तो ऐसे कई प्रसंग और लोगों का स्मरण आता है, जिन्होंने इस यात्रा की सफलता के लिए स्वयं सब कुछ समर्पित कर दिया।

प्रारंभिक काल के वे युवा कार्यकर्ता एक योद्धा की तरह देश प्रेम से ओत–प्रोत होकर संघ कार्य हेतु देशभर में निकल पड़े। अप्पाजी जोशी जैसे गृहस्थ कार्यकर्ता हों या प्रचारक स्वरूप में दादाराव परमार्थ, बालासाहब व भाऊराव देवरस बंधु, यादवराव जोशी, एकनाथ रानडे आदि लोग डॉक्टर हेडगेवार जी के सान्निध्य में आकर संघ कार्य को राष्ट्र सेवा का जीवनव्रत मानकर जीवन पर्यन्त चलते रहे।

संघ का कार्य लगातार समाज के समर्थन से ही आगे बढ़ता गया। संघ कार्य सामान्य जन की भावनाओं के अनुरूप होने के कारण शनैः शनैः इस कार्य की स्वीकार्यता समाज में बढ़ती चली गई। स्वामी विवेकानंद से एक बार उनके विदेश प्रवास में यह पूछा गया कि आपके देश में तो अधिकतम लोग अनपढ़ हैं, अँग्रेजी तो जानते ही नहीं हैं, तो आपकी बड़ी–बड़ी बातें भारत के लोगों तक कैसे पहुँचेगी? उन्होंने कहा कि जैसे चीटियों को शक्कर का पता लगाने के लिए अँग्रेजी सीखने की जरूरत नहीं है, वैसे ही मेरे भारत के लोग अपने आध्यात्मिक ज्ञान के चलते किसी भी कोने में चल रहे सात्विक कार्य को तुरंत समझ जाते हैं व वहीं वो चुपचाप पहुँच जाते हैं। इसलिए वे मेरी बात समझ जायेंगे। यह बात सत्य सिद्ध हुई। वैसे ही संघ के इस सात्विक कार्य को धीरे ही क्यों न हो, सामान्य जन से स्वीकार्यता व समर्थन लगातार मिल रहा है।

संघ कार्य के प्रारंभ से ही संपर्कित व नये–नये सामान्य परिवारों द्वारा संघ कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद व आश्रय प्राप्त होता रहा। स्वयंसेवकों के परिवार ही संघ कार्य संचालन के केंद्र रहे। सभी माता–भगिनियों के सहयोग से ही संघ कार्य को पूर्णता प्राप्त हुई। दत्तोपंत ठेंगड़ी या यशवंतराव केलकर, बालासाहेब देशपांडे तथा एकनाथ रानडे, दीनदयाल उपाध्याय या दादासाहेब आपटे जैसे लोगों ने संघ प्रेरणा से समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में संगठनों को खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई।

ये सभी संगठन वर्तमान समय में व्यापक विस्तार के साथ–साथ उन क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। समाज की बहनों के मध्य इसी राष्ट्र कार्य हेतु राष्ट्र सेविका समिति के माध्यम से मौसी जी केलकर से लेकर प्रमिलाताई मेढ़े जैसी मातृसमान हस्तियों की भूमिका इस यात्रा में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

संघ द्वारा समय–समय पर राष्ट्रीय हित के कई विषयों को उठाया गया। उन सभी को समाज के विभिन्न लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ, जिनमें कई बार सार्वजनिक रूप से विरोधी दिखने वाले लोग भी शामिल रहे। संघ का यह भी प्रयास रहा कि व्यापक हिंदू हित के मुद्दों पर सभी का सहयोग प्राप्त किया जाए। राष्ट्र की एकात्मता, सुरक्षा, सामाजिक सौहार्द तथा लोकतंत्र एवं धर्म–सँस्कृति की रक्षा के कार्य में असँख्य स्वयंसेवकों

ने अवर्णनीय कष्टों का सामना किया और सैकड़ों का बलिदान भी हुआ। इन सबमें समाज के संबल का हाथ हमेशा रहा है।

1981 में तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् में भ्रमित करते हुए कुछ हिंदुओं का मतांतरण करवाया गया। इस महत्वपूर्ण विषय पर हिंदू जागरण के क्रम में आयोजित लगभग पाँच लाख की उपस्थिति वाले सम्मेलन की अध्यक्षता करने हेतु तत्कालीन काँग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्णसिंह उपस्थित रहे। 1964 में विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना में प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी चिन्मयानंद, मास्टर तारा सिंह व जैन मुनी सुशील कुमार जी, बौद्ध भिक्षु कुशोक बकुला व नामधारी सिख सद्गुरु जगजीत सिंह इनकी प्रमुख सहभागिता रही। हिन्दू शास्त्रों में अस्पृश्यता का कोई स्थान नहीं है, यह पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से श्री गुरूजी गोलवलकर की पहल पर उडुपी में आयोजित विश्व हिंदू सम्मेलन में पूज्य धर्माचार्यों सहित सभी संतों–महंतों का आशीर्वाद व उपस्थिति रही। जैसे प्रयाग सम्मेलन में न हिंदुः पतितो भवेत् (कोई हिन्दू पतित नहीं हो सकता) का प्रस्ताव स्वीकार हुआ था, वैसे ही इस सम्मेलन का उद्घोष था – हिंदवः सोदराः सर्वे अर्थात सभी हिन्दू भारत माता के पुत्र हैं। इन सभी में तथा गौहत्या बंदी का विषय हो या राम जन्मभूमि अभियान, संतों का आशीर्वाद संघ स्वयंसेवकों को हमेशा प्राप्त होता रहा है।

स्वाधीनता के तुरंत पश्चात राजनीतिक कारणों से संघ कार्य पर तत्कालीन सरकार द्वारा जब प्रतिबंध लगाया गया, तब समाज के सामान्य जनों के साथ अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने विपरीत परिस्थितियों में भी संघ के पक्ष में खड़े होकर इस कार्य को संबल प्रदान किया। यही बात आपातकाल के संकट समय में भी अनुभव में आई। यही कारण है कि इतनी बाधाओं के पश्चात भी संघ कार्य अक्षुण्ण रूप से निरंतर आगे बढ़ रहा है। इन सभी परिस्थितियों में संघ कार्य एवं स्वयंसेवकों को सँभालने का दायित्व हमारी माता–भगिनियों ने बड़ी कुशलता से निभाया। यह सभी बातें संघ कार्य हेतु सर्वदा प्रेरणास्रोत बन गयी हैं।

भविष्य में राष्ट्र की सेवा में समाज के सभी लोगों के सहयोग एवं सहभागिता के लिए संघ स्वयंसेवक शताब्दी वर्ष में घर–घर संपर्क के द्वारा विशेष प्रयास करेंगे। देशभर में बड़े शहरों से लेकर सुदूर गाँवों के सभी जगहों तक तथा समाज के सभी वर्गों तक पहुँचने का प्रमुख लक्ष्य रहेगा। समूचे सज्जन शक्ति के समन्वित प्रयासों द्वारा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की आगामी यात्रा सुगम एवं सफल होगी।

100 वर्ष की संघ यात्रा

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

केशव की दृष्टी में,
भारत सर्वश्रेष्ठ बने सृष्टी में
कठिन पथ पर चल पड़े,
भारत माता की सेवा में खड़े

पग–पग द्वेषपूर्ण व्यवहार,
सभी दिशाओं में तिरस्कार
केशव ने फिर भी प्रण लिया,
हिंदू संगठन का मंत्र दिया

केशव ने थामा रथ धर्म का,
राष्ट्र प्रथम से ओतप्रोत का
हर नवजवान हो चरित्रवान,
इसलिए कर दिया शाखा का निर्माण

अविरत बाधाएं, सभ्यता पर प्रहार,
आत्मीयता से करते रहे,
सामाजिक समरसता का पुरस्कार
सींचते रहे हर एक पौधे को,
राष्ट्र प्रथम की भावना को

खोखली बंदी हो या झूठे आरोप,
मजबूती से बढ़े स्वयंसेवक
देश सेवा में जीवन अर्पण,
करते हैं साधना सधन.....

संस्कृति है तो देश है,
श्रीराम हमारे पथ दर्शक हैं
राम मंदिर अभियान से जोड़ा देश का प्राण,
बढ़ाया भारतीय संस्कृति का सम्मान

जनजाति हो या सेवा बस्ती,
जात–पात का भेद मिटाया
आत्मिक भाव से अपनाया,
देश प्रेम सिखलाया.....

स्वबोध और शत्रुबोध की विस्मृति,
समाज में जगाई स्मृति
स्वदेशी का नारा दिलाया,
आत्मसम्मान का दीप जलाया.....

हर क्षेत्र में भारत बढ़े,
हर क्षेत्र मे संगठन खड़े
हर संगठन का कार्य दिखाता,
राष्ट्र साधना का मंत्र निभाता.....

अमृत काल में, विश्वगुरु भारत का संकल्पना मंत्र,
आरंभ किया पंच–परिवर्तन का सूत्र
देश होगा परिवर्तित अपना,
यही तो है शताब्दी वर्ष का सपना.....

pankajjayswal1977@gmail.com

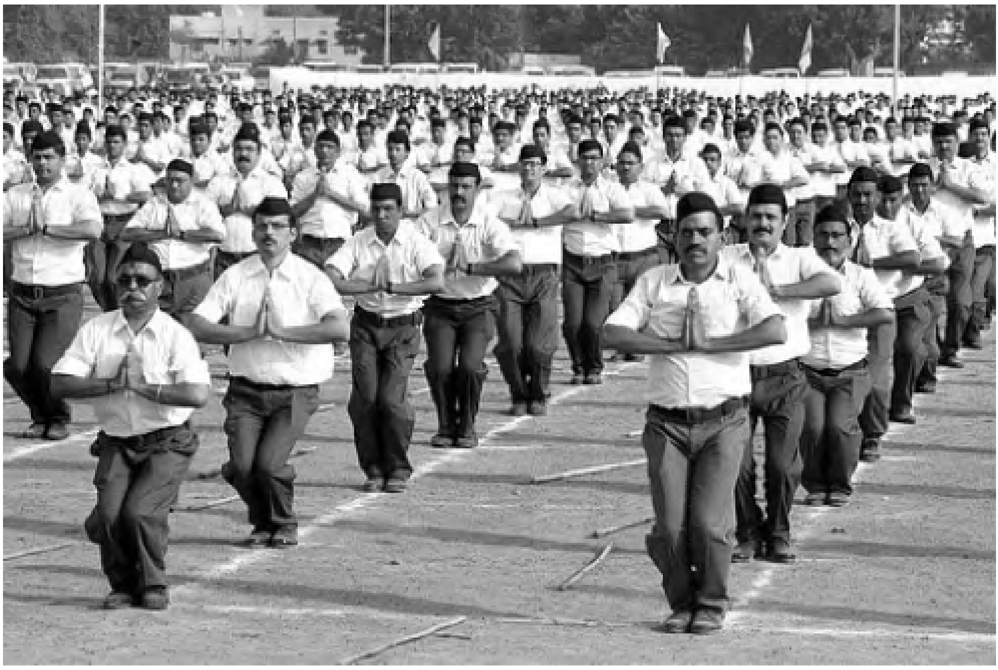

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री, भारत सरकार)

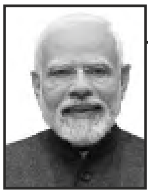

राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना को 100 वर्ष पूरे हो गए हैं। संघ प्रारंभ से ही राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में संघ ने समाज के अलग–अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया। संघ ने हमेशा राष्ट्र निर्माण का मार्ग चुना।

100 वर्ष पूर्व विजयादशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनर्स्थापन था, जिसमें राष्ट्र चेतना समय–समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए, नए–नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है। ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने मिल रहा है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि–कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्श परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित–पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती है, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती है, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग–अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण, महिला सशक्तिकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है... राष्ट्र प्रथम।

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का रास्ता चुना और इस पर चलने के लिए जो कार्यपद्धति चुनी, वो थी नित्य–नियमित चलने वाली शाखाएँ। संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहाँ से स्वयंसेवक की अहम् से वयं की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएँ... व्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी है।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित–पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती है, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती है, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग–अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं।

राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति... यही संघ की 100 वर्षों की यात्रा का आधार बने। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं। संघ जब से अस्तित्व में आया.... संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। आजादी की लड़ाई के समय परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए। आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा....। उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा। इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ। ऋषितुल्य परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में

फंसाया गया, लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया। क्योंकि वो जानते हैं कि हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है। समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा है। समाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है। प्रारंभ से संघ राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे। यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था। खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना... ये हर स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुँचने वालों में से एक रहते हैं।

अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में, संघ ने समाज के अलग–अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया.. स्वाभिमान जगाया। संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है, जो दुर्गम है। जहाँ पहुँचना सबसे कठिन है। संघ दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति–रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने–संवारने में अपना सहयोग देता रहा है। अपना कर्तव्य निभा रहा है। आज सेवा भारती, विद्या भारती, एकल विद्यालय, वनवासी कल्याण आश्रम, आदिवासी समाज के सशक्तिकरण का स्तंभ बनकर उभरे हैं।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियाँ हैं, जो ऊँच–नीच की भावना है, जो कुप्रथाएँ हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉक्टर साहब से लेकर आज तक, संघ की हर महान विभूति ने, हर सर–संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर "न हिन्दू पतितो भवेत' की भावना को आगे बढ़ाया। पूज्य बाला साहब देवरस जी कहते थे–छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं ! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया। वर्तमान सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी ने भी समरसता के लिए समाज के सामने एक कुआँ, एक मंदिर और एक श्मशान का स्पष्ट लक्ष्य रखा है।

जब 100 साल पहले संघ अस्तित्व में आया था, तो उस समय की आवश्यकताएँ, उस समय के संघर्ष कुछ और थे। लेकिन आज 100 वर्षों बाद जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है, तब आज के समय की चुनौतियाँ अलग हैं, संघर्ष अलग हैं। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, हमारी एकता को तोड़ने की साजिशें, डेमोग्राफी में बदलाव के षड़यंत्र, हमारी सरकार इन चुनौतियों से तेजी से निपट रही है। मुझे ये खुशी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस रोडमैप बनाया है।

संघ के पंच परिवर्तन, स्व बोध, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक शिष्टाचार और पर्यावरण... ये संकल्प हर स्वयंसेवक के लिए देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को परास्त करने की बहुत बड़ी प्रेरणा है।

स्व बोध की भावना का उद्देश्य गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व और स्वदेशी के मूल संकल्प को आगे बढ़ाना है। सामाजिक समरसता के जरिए वंचित को वरीयता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना का प्रण है। आज हमारी सामाजिक समरसता को घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी में आ रहे बदलाव से भी बड़ी चुनौती मिल रही है। देश ने भी इससे निपटने के लिए डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है। हमें कुटुम्ब प्रबोधन यानी परिवार सँस्कृति और मूल्यों को भी मजबूत बनाना है। नागरिक शिष्टाचार के जरिए नागरिक कर्तव्य का बोध हर देशवासी में भरना है। इन सबके साथ अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुए आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना है। अपने इन संकल्पों को लेकर संघ अब अगली शताब्दी की यात्रा शुरू कर रहा है। 2047 के विकसित भारत में संघ का हर योगदान, देश की ऊर्जा बढ़ाएगा, देश को प्रेरित करेगा। पुनः प्रत्येक स्वयंसेवक को बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।

(साभार आज तक डाट काम से)

गत दो वर्षों से अनवरत सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन

गत दो वर्षों से राजस्थान अजमेर शहर में श्री हनुमत् शक्ति जागरण समिति द्वारा विश्व हिन्दू परिषद धर्मप्रसार विभाग का सुंदरकांड का पाठ साप्ताहिक सत्संग के रुप में 125 मन्दिरों में हर मंगलवार को साम 7 बजे आयोजित किया जाता है और अतिन्युन उपस्थिति 40 से ऊपर ही रहती है।

यह सारे सत्संग जिन कार्यकर्ताओं द्वारा सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं, ऐसे कार्यकर्ताओं की एक बैठक केन्द्रीय महामंत्री श्री

बजरंग लाल बागड़ा जी एवं धर्मप्रसार विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख श्री सुधांशु मोहन पटनायक की उपस्थिति में पुष्करराज में संपन्न हुई। बैठक का आयोजन श्री आनन्द जी गोयल एवं किशन जी गुर्जर द्वारा किया गया था।

विश्व हिन्दू परिषद के विभिन्न आन्दोलन

डॉ. प्रवेश कुमार, जेएनयू

विश्व हिन्दू परिषद का ही प्रयास था जब काशी में 80 के दशक में गोरक्ष पीठ के संत अवैद्यनाथ जी के नेतृत्व में तमाम संतों के साथ डोम राजा के यहाँ भोजन किया गया। विश्व हिन्दू परिषद कहती है कि हम किसी भी असमानता के भाव को नहीं मानते, सभी हिन्दू सहोदर हैं और हमारा ध्येय इस हिन्दू समाज में एकत्व भाव को जागृत करना।

विश्व हिन्दू परिषद के विभिन्न आन्दोलन – विश्व हिन्दू परिषद हिन्दू समाज का गौरव है। देश और दुनिया में हिन्दू जीवन दर्शन, मूल्य, मान्यताओं को वैश्विक पटल पर ध्यानाकर्षण करने का कार्य वर्षों से परिषद करता आ रहा है। इस लेख में परिषद के कुछ आंदोलनात्मक गतिविधियों में एक नजर डालने का प्रयास किया जा रहा है। विश्व हिन्दू परिषद ने अपने निर्माण से ही हिन्दू–हिन्दू भाई–भाई का विचार दिया, तभी तो उसने कहा हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिंदू पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्र समानता। इसी में परिषद ने हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता को लेकर एक अभियान आन्दोलन चलाया।

अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन – हिन्दू समाज के भीतर परतंत्रता के काल खंड में कुछ ऐसी बुराइयाँ आ गईं, जिन्होंने हमारे हिन्दू समाज के भीतर कई प्रकार की कुरीतियों को प्रवेश दिया। भारत के इतिहास में हिन्दू समाज पर प्रहार समय–समय पर होता रहा है। मुस्लिम शासन काल में अस्पृश्यता का वर्णन हमें सर्वप्रथम दिखता है, जब मलेच्छ और हिन्दू इस प्रकार दो पहचानों को हम देखते हैं। मेगस्थनीज, फाहियान, ह्वेनसांग कितने ही विदेशी यात्रियों ने भारत की समाज व्यवस्था पर लिखा, परंतु किसी ने भी अस्पृश्यता का कोई वर्णन नहीं किया। इसका अर्थ अस्पृश्यता का हिन्दू समाज से कोई लेना–देना नहीं है। सर्वप्रथम कार्य को जाति का रूप देने का कुकृत्य अँग्रेजी सरकार द्वारा किया गया। उससे पूर्व कार्य व्यक्ति की योग्यता पर आधारित था न कि किसी जन्म पर। ऋग्वेद में चार वर्णो का उल्लेख हमें मिलता है। वहीं महाभारत में भगवान कृष्ण के मुख से निकले शब्द चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्तारमव्ययम्। भगवान कहते हैं यह चार वर्ण मेरे द्वारा बनाये गए हैं, जिनका आशय गुणों, कर्मो से है न कि किसी के जन्म से। इस तरह कर्म पर आधारित व्यवस्था को जन्म के आधार पर स्थापित करने का कार्य परतंत्रता के कालखण्ड में हुआ।

विश्व हिन्दू परिषद मानता है कि अलग–अलग कालखण्डों में तथा वैदिक काल, स्मृति काल और बाद के कालों में अस्पृश्यता को लेकर जो–जो भी कहा गया है, वह उस काल, परिस्थिति की रचना थी; परंतु आज हम जिस युग में रह रहे हैं, इनमें संशोधन की आवश्यकता है, सामाजिक संबंध समानता और भ्रातृत्व पर आधारित होने चाहिए।

अस्पृश्यता निवारण की दृष्टि से परिषद ने अनुसूचित समाज की बस्तियों में सेवा के कई प्रकल्पों को प्रारंभ किया, जिसमें इन बस्तियों में संतों की पदयात्राएँ निकालना, समरसता भोज अर्थात सहज भाव से अपने बन्धुओं के भोजन, उनके गृह कार्यक्रमों में सम्मिलित होना आदि सम्मिलित है। वर्ष 1970 में पंढरपुर महाराष्ट्र के अधिवेशन में अस्पृश्यता पर विशेष चर्चा हुई, श्रृंगेरी और द्वारिका शंकराचार्यों के द्वारा अस्पृश्यता प्रतिबंध की बात कही गई, जिसे इस अधिवेशन में रखा गया। विश्व हिन्दू परिषद का ही प्रयास था, जब काशी में 80 के दशक में गोरक्ष पीठ के संत अवैद्यनाथ जी के नेतृत्व में तमाम संतों के साथ डोम राजा के यहाँ भोजन किया गया। विश्व हिन्दू परिषद कहती है कि हम किसी भी असमानता के भाव को नहीं मानते, सभी हिन्दू सहोदर हैं और हमारा ध्येय है इस हिन्दू समाज में एकत्व भाव को जागृत करना।

गौरक्षा आन्दोलन – भारतीय मानबिन्दुओं की सुरक्षा और संरक्षण विश्व हिन्दू परिषद का प्रमुख लक्ष्य रहा

है। गौमाता हिन्दुओं के लिए सदैव से एक प्रमुख मानबिंदु रही है। धार्मिक दृष्टि से ही नहीं साँस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी वह हिन्दुओं के लिए पूजनीय और वन्दनीय रही है। वहीं आज गाय के पंचगव्य के महत्व पर दुनिया भर में शोध हो रहे हैं, भारत में हिन्दू समाज सनातन काल से गाय माता को पूजनीय मानकर उनकी पूजा आराधना करता है। विश्व हिन्दू परिषद द्वारा अपनी स्थापना के बाद प्रथम विश्व हिन्दू सम्मेलन में प्रस्ताव पारित करके गोरक्षा पर विशिष्ट ध्यानाकर्षण दिया गया था।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति हेतु संघर्ष – इतिहासकार बताते हैं कि भारत की आजादी से पूर्व अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बने मंदिर एवं जन्मभूमि के लिए 76 युद्ध लड़े गए, जिनमें 3 लाख 50 हजार हिन्दुओं ने बलिदान दिया। देश की आजादी के बाद भी श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष जारी रहा। श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर तुड़वाकर बनाए गए तीन गुंबदों वाले ढ़ाँचे के मध्य गुंबद में 22 दिसम्बर, 1949 की रात रामलला प्रकट हुए। तब से गुंबद के अंदर भजन–कीर्तन चलता रहा।

पुजारी को रामलला की पूजा की अनुमति थी, परन्तु बाहर प्रशासन ने ताले लगा दिए थे। श्रीराम जन्मभूमि पुनः हिन्दुओं को सौंप दी जाए, ताकि वहाँ पर श्रीराम का एक भव्य–दिव्य मंदिर बनाया जा सके, इसके लिए देश की आजादी के बाद हुए संघर्ष व आन्दोलनों की गाथा का प्रारंभ होता है। 23 मार्च, 1983 में उत्तर प्रदेश के शहर मुजफ्फरनगर में आयोजित हिन्दू सम्मेलन में काँग्रेस के नेता तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री दाऊदयाल खन्ना जी ने श्रीराम जन्मभूमि–अयोध्या, श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा तथा वाराणसी के काशी विश्वनाथ की मुक्ति का आह्वान किया। भारत के कार्यकारी प्रधानमंत्री रह चुके गुलजारी लाल नंदा जी भी मंच पर विराजमान थे। तीनों स्थान हिन्दुओं को दिए जाएँ, ऐसा प्रस्ताव वहाँ पारित किया गया।

7–8 अप्रैल, 1984 को विश्व हिन्दू परिषद द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में पहली धर्म संसद आयोजित की गई, वहाँ प्रस्ताव पारित किया गया कि श्रीराम जन्मभूमि के द्वार में लगा ताला खुलवाने के लिए जन–जागरण यात्राएँ निकाली जाएँ। 1984 की धर्म संसद के प्रस्ताव की अनुपालना में विश्व हिन्दू परिषद ने अक्टूबर 1984 में जन–जागरण के लिए बिहार के सीतामढ़ी से दिल्ली तक श्रीराम–जानकी रथ यात्रा शुरू की। इंदिरा गाँधी जी की हत्या के कारण यह यात्रा एक वर्ष तक के लिए रोकनी पड़ी, अक्टूबर 1985 में रथ यात्राएँ पुनः प्रांरभ हुई। अक्टूबर 1985 में उडुपी (कर्नाटक) में हुई धर्म संसद में ताला खुलवाने के लिए संतों ने चेतावनी दी। श्रीराम–जानकी रथ यात्राओं से हिन्दू समाज में उत्साह का संचार होने लगा था। 1 फरवरी, 1986 को फैजाबाद के जिला दंडाधिकारी ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर (ढ़ाँचे) के द्वार पर लगा ताला खोलने के आदेश दे दिए। जगद्गुरू रामानंदाचार्य स्वामी शिवरामाचार्य की अध्यक्षता में 'श्रीराम जन्मभूमि न्यास' का गठन किया गया। 1 फरवरी, 1989 को प्रयागराज में त्रिवेणी के तट पर कुम्भ मेले में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा धर्म संसद का आयोजन किया गया। पूज्य देबरहा बाबा की उपस्थिति में निर्णय हुआ कि देश के हर गाँव में रामशिला पूजन कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। पहली रामशिला का पूजन बद्रीनाथ धाम में किया गया। दो लाख 75 हजार स्थानों पर रामशिला पूजन हुआ। इस अभियान में लगभग 6 करोड़ लोगों की सहभागिता रही।

देवोत्थान एकादशी 9 नवम्बर, 1989 को राम मंदिर के लिए अनुसूचित जाति के एक बन्धु कामेश्वर चौपाल जी द्वारा हजारों राम भक्तों एवं संतों की उपस्थिति में शिलान्यास किया गया। वेद मंत्रों एवं शंखध्वनि के मध्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 23–24 जून, 1990 को हरिद्वार के भारत माता मंदिर में मार्गदर्शक मंडल की बैठक में संतों द्वारा देवोत्थान एकादशी 30 अक्टूबर, 1990 से मंदिर निर्माण के लिए कारसेवा की घोषणा की गई। कारसेवा रोकने के लिए उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की। अयोध्या की ओर जाने वाली सभी बस–ट्रेनें रद्द कर दी गईं। बड़ी सँख्या में पैरामिलिट्री फोर्स व पुलिस तैनात थी, ढाँचे की ओर जाने वाले रास्तों में खाइयाँ खोदी गई, कंटीले तार लगाए गए, पुल बंद कर दिए गए।

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने कहा कि अयोध्या में परिंदा भी पर नहीं मार सकता। 30 अक्टूबर, 1990 को स्वामी वामदेव, श्री अशोक सिंहल एवं श्रीशचन्द्र दीक्षित के नेतृत्व में कारसेवक सारी बाधाएँ पार कर अयोध्या पहुँच गए। कारसेवा प्रारंभ हो गई, कुछ उत्साही कारसेवकों ने ढाँचे पर चढ़कर भगवा ध्वज फहरा दिया। पुलिस द्वारा गोलियाँ चलाई गई। कई कारसेवक घायल हो गए थे। 02 नवम्बर, 1990 को पुलिस ने घरों से निकालकर कारसेवकों को गोली मारी। कोलकाता के दो सगे भाई राम कुमार कोठारी व शरद कुमार कोठारी सहित अनेक रामभक्तों का बलिदान हो गया। आज अयोध्या में उसी स्थान पर भव्य राम मंदिर बना है, तो इसमें परिषद की महती भूमिका है।

राम सेतु बचाओ आन्दोलन (2007) – हिन्दू धर्म के महाकाव्य रामायण के मुताबिक रामसेतु का निर्माण भगवान राम ने अपनी वानर सेना के साथ मिलकर किया था। रामसेतु का निर्माण नल और नील नाम के दो वानरों ने किया था, कहा जाता है कि जब रावण ने सीता का अपहरण कर लिया था, तब लंका पर चढ़ाई करने के लिए भगवान राम ने इस पुल का निर्माण कराया था। इस पुल के जरिए भगवान राम की सेना ने लंका में प्रवेश किया था। यह स्थान हमारे भगवान राम से जुड़ा था, लेकिन उस समय सरकार सेतु समुद्रम परियोजना के तहत इस रामसेतु को नष्ट करना चाहती थी, जिससे हिन्दू समाज में काफी रोष था। विश्व हिन्दू परिषद ने इसका खुलकर विरोध किया। आन्दोलन, अभियानों के लिए परिषद निरंतर हिन्दू हितों में सक्रिय है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में अमेरिका, पाकिस्तान और बाँग्लादेश का झूठ

भारत ने की तथ्यों और तर्कों से धुलाई

मृत्युंजय दीक्षित

अमेरिका में आयोजित हो रही संयुक्त राष्ट्र महासभा–2025 की वार्षिक आम महासभा में हो रहे कुछ वैश्विक नेताओं के संबोधन स्थायी शांति व विकास की दृष्टि से पूरे विश्व को निराश करने वाले हैं। अमेरिका, पाकिस्तान, बाँग्लादेश के शासनाध्यक्षों के भाषण इंगित करते हैं कि भारत को अपनी सामरिक सीमा सुरक्षा के प्रति और अधिक सचेत रहना होगा। यदि भारतीय सुरक्षा दृष्टिकोण से देखा जाए तो अमेरिका, पाकिस्तान और बाँग्लादेश ने पहलगाम हमले की निंदा नहीं की, अपितु पाकिस्तान ने खुद को ही आतंकवाद से पीड़ित बताने का असफल प्रयास किया। इस दौरान उसने एक बार फिर ऑपरेशन सिंदूर के अतंर्गत अपनी करारी पराजय को अपनी विजय बताने का प्रयास करते हुए झूठा राग अलापा कि उसने भारत के सात लड़ाकू फाइटर जेट विमान मार गिराए।

अमेरिकी राष्ट्रपति नोबेल पुरस्कार पाने के लिए इतने अधिक उतावले हो रहे हैं कि वह सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक मर्यादा ही भूल गए हैं। अंतरर्राष्ट्रीय मंच से उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि दादागिरी करने का अधिकार केवल उन्हीं के पास है। उन्होंने सात युद्ध समाप्त करवाने का दावा किया, भारत और चीन द्वारा रूस से तेल खरीद पर झूठ का पुलिंदा प्रस्तुत किया। ट्रम्प भारत के साथ–साथ रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन से भी बहुत निराश हैं, क्योंकि भारत, रूस और चीन सहित कुछ अन्य देशों ने भी अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को नोबेल पुरस्कार के लिए नामित नहीं किया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प आत्ममुग्धता के शिकार हो चुके हैं, संभवतः वह ऐसे पहले व्यक्ति हैं, जो अपने लिए नोबेल माँग रहे हैं। उन्होंने अपने कोट पर एफ–35 फाइटर जेट का लोगो लगाकर एक बड़ा खतरनाक संदेश देने का काम किया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को यह डर भी सता रहा है कि अगर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस–यूक्रेन युद्ध समाप्त करवाने में सफलता प्राप्त कर ली, तो कहीं मोदी जी को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित न कर दिया जाए। ट्रम्प बार–बार भारत–पाकिस्तान के मध्य युद्ध रुकवाने का दावा कर रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि पहलगाम हमले के बाद भारत ने केवल पाकिस्तान स्थित आतंकवादी ठिकानों पर हमले किये थे और उन्हें नेस्तनाबूद कर दिया था, जिसके बाद पाकिस्तान की सेना ने भारत पर हमला किया था और भारत ने पाकिस्तान को धूल चटाई थी, जिससे पाकिस्तान घुटनों पर आ गया था।

भारत तीव्र गति से विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अब भारत में चिप से लेकर शिप तक का निर्माण हो रहा है। कई अन्य नए क्षेत्रों में भी अब भारत का दबदबा बढ रहा है, जिसके कारण भारत विरोधी शक्तियाँ बुरी तरह से घबरा गई हैं और भारत को रोकने के लिए तरह–

तरह के षड्यंत्र कर रही हैं, किंतु अब भारत अत्यंत सतर्क है।

पाकिस्तान और बाँग्लादेश ने उगला जहर – अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने तीन माह में दूसरी बार पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेनाध्यक्ष मुनीर को एक घंटे तक इंतजार करवाकर उनकी सरेआम बेइज्जती की; किंतु दोनों ने मुलाकात के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की जमकर चापलूसी की और उन्हें शांतिदूत कहकर संबोधित किया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने भारत को स्पष्ट रूप से अपना दुश्मन बताया और कहा कि हाल ही में भारत के साथ हुए संघर्ष में पाक की जीत हुई थी और पाकिस्तान ने भारत के सात विमान मार गिराए थे। उन्होंने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय मंच से यह झूठ बोला कि भारत का कट्टरपंथी हिंदुत्व पूरी दुनियाँ के लिए एक गंभीर खतरा है। महासभा में शहबाज शरीफ का भाषण उनकी मूल विचारधारा का ही प्रतिबिम्ब है। शरीफ ने सिन्धु समझौता रद्द रहने पर भयावह युद्ध की धमकी भी दी।

पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ का संबोधन केवल भारत और हिन्दुओं के प्रति नफरत का प्रदर्शन था। शहबाज ने एक बार फिर कश्मीर का मुद्दा उठाया और कहा कि वह कश्मीरियों के साथ खड़े हैं। ये कहते हुए शायद शहबाज भूल गए थे कि इसी मंच से भारत की पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय सुषमा स्वराज पूरे विश्व को बता गई हैं कि 'जम्मू–कश्मीर भारत का अभिन्न अंग था, है और कायनात की अंतिम रात तक रहेगा।' जम्मू कश्मीर की स्थापना भारत के महर्षि कश्यप ने की थी। कश्मीर का मूल अस्तित्व भारत ही है और उसकी चाहत में एक दिन पाकिस्तान का अस्तित्व ही पूरी दुनियाँ से समाप्त हो जाएगा।

पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के मंच से ही अमेरिकी राष्ट्रपति को खुश करने के लिए उनके लिए नोबेल पुरस्कार माँग लिया। उसे लग रहा है कि ऐसा करने से वह कश्मीर को लेकर भारत पर दबाव बना सकता है और अमेरिका से अपने हक के लिए इनाम माँग सकता है। बाँग्लादेश के मोहम्मद यूनुस ने भी एक सुनियोजित साजिश के तहत जमकर भारत के विरुद्ध जहर उगला और कहा कि उन्हें भारत से बहुत समस्याएँ हैं। यूनुस के अनुसार इस समय भारत और बाँग्लादेश के मध्य रिश्ते बहुत बिगड़ चुके हैं और अब तक के सबसे निचले पायदान पर हैं। भारत सरकार इन देशों के संयुक्त राष्ट्र महासभा में ऐसे प्रलापों के लिए पहले से चौकन्नी और तैयार थी। पाकिस्तान और बाँग्लादेश के इस अनर्गल प्रलाप का उत्तर देते हुए भारत के प्रतिनिधि ने तथ्यों और तर्कों के साथ इनकी जमकर धुलाई की।

शास्त्र और शस्त्र वर्तमान की आवश्यकता है : बजरंग दल

भोपाल, 13 अक्टूबर 2025। बजरंग दल भोपाल विभाग के द्वारा आयोजित शास्त्र एवं शस्त्र पूजन कार्यक्रम नया भोपाल डीबी मॉल के सामने मेट्रो स्टेशन के नीचे आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मंचासीन पूज्य संत महंत पुरुषोत्तमानन्द गिरी जी महाराज, पूज्य साध्वी रंजना दीदी, प्रांत मंत्री श्री नवल जी, क्षेत्र संयोजक बजरंग दल श्री विश्व वर्धन भट्ट, प्रांत संगठन मंत्री श्री सुरेंद्र जी, प्रांत संयोजक बजरंग दल श्री अवधेश तिवारी, विभाग मंत्री श्री जीवन शर्मा रहे।

पूज्य साध्वी रंजना दीदी ने कहा कि बजरंग दल देश का युवा संगठन है। देश की सारी विधर्मी शक्तियाँ केवल बजरंग दल से ही डरती हैं। देश का बल बजरंग दल है। हर युवा को शस्त्र रखना चाहिए। क्षेत्र संयोजक बजरंग दल श्री विश्व वर्धन भट्ट ने कहा कि शस्त्र पूजन भगवान राम की रावण पर जीत और माँ दुर्गा की महिषासुर पर विजय का प्रतीक है। पांडवों ने भी अज्ञातवास के बाद अपने शस्त्रों की पूजा की थी, जिसके बाद उन्हें विजय मिली। यह आत्मगौरव और समाज की रक्षा का प्रतीक है। यह शस्त्रों को धर्म और न्याय की रक्षा के लिए उपयोग करने का संदेश देता है। यह परंपरा युवाओं को साहस, अनुशासन और समाज सेवा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। यह पूजा करने वाले के साहस और शक्ति में वृद्धि करती है। भारतीय सेना भी हर साल दशहरे पर शस्त्र पूजा करती है। हमारे प्रत्येक देवी–देवता के हाथ में अस्त्र–शस्त्र हैं, कोई भी देवी–देवता निशस्त्र नहीं हैं, फिर हिंदू समाज को शस्त्र रखने में क्या समस्या है? संविधान भी हमें आत्मरक्षा का अधिकार देता है।

प्रान्त संयोजक श्री अवधेश तिवारी ने कहा कि राजधानी भोपाल गौ मांस, ड्रग्स जिहाद, लैंड जिहाद और लव जिहाद का केंद्र बनती जा रही है। राजधानी भोपाल एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में गौ वंश हत्या, गौ मांस एवं गोवंश की तस्करी की घटना निरंतर सामने आ रही हैं। पिछले दिनों राजधानी भोपाल के ऐशबाग, हबीबगंज, निशातपुरा, परवलिया सड़क, बिलखिरिया, सुखी सेवनिया थाना क्षेत्र में गौ वंश हत्या एवं गौ मांस तस्करी की घटनाएँ सामने आई हैं। गोवंश हमारी सनातन हिंदू धर्म की आस्था का केंद्र बिंदु है। हिंदू समाज गौ वंश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी कीमत पर गौ वंश हत्या एवं गौ वंश तस्करी नहीं होने देगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन श्री अभिजीत सिंह राजपूत विभाग संयोजक बजरंग दल ने किया एवं कार्यक्रम में पूरे समय प्रांत सह मंत्री जितेंद्र चौहान, विभाग सह मंत्री हरिओम शर्मा, विभाग सह संयोजक नीरज प्रजापति एवं भोपाल के 6 जिलों के जिला मंत्री मोहित सोनी, कमल पिपरिया, नितिन साहू, चंद्रप्रकाश सावनानी, सुरेंद्र कीर, जितेंद्र मीणा एवं जिला संयोजक बजरंग दल श्री सुरेंद्र ठाकुर, रोहित श्रीवास, शिवराज धाकड़, भूपेंद्र मेवाड़ा, अभिषेक शर्मा सहित हजारों की सँख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। संपूर्ण व्यवस्था स्थानीय जिला नया भोपाल की टीम के द्वारा की गई।

vhpmadhybharat@gmail.com

शक्ति के उपासक बनें

विनोद कुमार सर्वोदय

भारत भूमि के महान सपूत महर्षि अरविन्द ने वर्षों पूर्व जब हम अँग्रेजों के अधीन थे, अपनी एक छोटी रचना 'भवानी मंदिर' की भूमिका में लिखा था कि 'हमने शक्ति को छोड़ दिया है, इसलिए शक्ति ने भी हमें छोड़ दिया।' अतः पराधीनता में रहना हमारी दुर्बलता का ही परिणाम था। अनेक मनीषियों ने लिखा व कहा भी था कि सदियों की पराधीनता से हमारी शक्तियाँ दुर्बल हुई हैं, अतः इससे मुक्त होना सर्वाधिक आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद ने भी हिन्दुओं को निर्भीक व बलवान बनने के लिए प्रेरित किया था। हिन्दू समाज की दुर्बलता, कायरता व भीरुता को गोरखनाथ पीठ के ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ व महंत अवैद्यनाथ जी भी समझते थे और इस आत्मघाती अवगुण से समाज को बाहर लाने का निरंतर प्रयास करते रहे। उसी धरोहर और परंपराओं को अनेक अवरोधों के उपरान्त भी निभाने वाला एक संत आज अपने समाज का अग्रणी सारथी बन गया है।

अपने अथक परिश्रम, तपस्या व सत्यनिष्ठा के बल पर योगी आदित्यनाथ के उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने से तथाकथित अनेक सेक्युलर बुद्धिजीवियों की बेचैनी बढ़ गयी है। ऐसा लगता है कि अब उनके ढोंग का साम्राज्य अपनी विदाई की प्रतीक्षा कर रहा हो। किसी को 'संविधान पर संकट' तो किसी को 'इस्लाम की रक्षा' चिंतित कर रही है। देश विरोधियों व देशद्रोहियों से त्रस्त हमारा भारतवर्ष स्वतंत्रता के पश्चात स्वच्छंद होकर अपनी साँस्कृतिक विरासत को भी सुरक्षित नहीं रख पाया। इतना ही नहीं अनेक अवसरों पर भारतीय समाज अपने मानबिंदुओं के लिए भी आग्रही नहीं हो सका। गाँधी–नेहरु की मुस्लिम उन्मुखी राजनीति ने आने वाले राजनेताओं को भी मुस्लिमपरस्ती का ही मार्ग दिखा कर सत्ता पाने के मोह में डाल दिया। तत्पश्चात लगभग सत्तर वर्षों से राष्ट्रवादी मूल भारतीय समाज शासकीय व्यवस्थाओं में जकड़ता रहा है।

मध्यकालीन मुस्लिम बर्बरता के इतिहास को भुला कर भी अगर देश विभाजन पूर्व व पश्चात हुई भीषण त्रासदी का ही अवलोकन किया जाए, तो मुस्लिम अत्याचारों की भयानक घटनाएँ मानवता को लज्जित करते हुए करोड़ों हृदयों को द्रवित व आक्रोशित कर देती हैं। उसमें चाहे कोलकत्ता में मुस्लिम लीगियों द्वारा (16 से 18 अगस्त) 1946 की सीधी कार्यवाही (डायरेक्ट एक्शन) में लूटे–मारे गये हजारों निर्दोष हिन्दुओं का नरसंहार हो और चाहे विभाजन (1947) के समय पाकिस्तान से आई असँख्य हिन्दुओं के शवों से लदी दर्जनों (लगभग 58) रेलगाड़ियाँ हों। अनुमानतः 15 लाख से ऊपर हिन्दुओं का कत्लेआम किया गया, साथ ही कश्मीर पर आक्रमण करके पाकिस्तानियों ने हिन्दुओं को परिवार सहित कत्ल करना और हजारों हिन्दू अबलाओं को ट्रकों में भरकर ले जाना आदि दिल दहलाने वाली दास्तान भुलाने योग्य नहीं हैं। विश्व के इतिहास में संभवतः इतनी भयंकर मानवीय त्रासदी कहीं ओर देखने को न मिले, फिर भी हमारे अधिकांश राजनीतिक व बौद्धिक समाज की सहानभूतियाँ 'जिन्नावादियों' के साथ थीं और अभी भी यथावत बनी हुई हैं।

निःसंदेह स्वतंत्रता के पश्चात हमको इतना दुर्बल व संकल्पहीन समझा जाने लगा कि विदेशी आक्रमण व अतिक्रमण (घुसपैठ) होने लगे। जब हमारा तत्कालीन नेतृत्व ही शांति, अहिंसा और भाईचारे के सहारे राज–काज चलाना चाहता था, तो हम देशविरोधी शक्तियों को कैसे रोक सकते थे? यह सत्य जब तक समझ पाते, तब तक हमारे लाखों निर्दोष नागरिकों व सैनिकों की बलि चढ़ चुकी थी।

राजनीतिक–बौद्धिक क्षेत्रों की बढ़ती अज्ञानता ने समाज को कायर बना कर स्वाभिमान से जीना ही भुला दिया। सशक्त व कुशल नेतृत्व के अभाव में देश में एकतरफा सामाजिक उत्पीड़न होता रहा। हमारा समाज राजनेताओं की ढुलमुल इच्छाशक्ति व स्वार्थसिद्धि के फेर में फँस कर स्वयं भी इसी भ्रम में जीता रहा, जिससे एक ऐसा वातावरण विकसित हुआ, जिसके अनुसार

साम्प्रदायिक सौहार्द व धर्मनिरपेक्षता बनाए रखने का उत्तरदायित्व केवल हिन्दू समाज का ही माना जाने लगा। जबकि कट्टरवादी मुस्लिम व ईसाई समाज को बहुसँख्यक हिन्दुओं द्वारा दिए गए राजस्व से मालामाल करना सरकार की प्राथमिकता बना दी गयी। देश के अधिकांश बुद्धिजीवियों व राजनेताओं की अज्ञानता व अराष्ट्रीयता ने संपूर्ण भारत को जाने–अनजाने एक अनिश्चित व आत्मघाती मार्ग पर खड़ा कर दिया। परिणामस्वरूप कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक व अटक से लेकर कटक तक अराजकता व आतंकवाद का खुला मैदान बन गया। पाकपरस्त मुस्लिम आतताइयों ने अपने आकाओं के सरंक्षण में सर्वप्रथम देव भूमि कश्मीर को हिन्दू विहीन किया, तत्पश्चात् पूर्वोत्तर के असम, मिजोरम, मेघालय, नगालैंड आदि प्रदेशों व केरल एवं पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त संभवतः दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि देश का कोई कोना ऐसा न बचा हो, जहाँ बम विस्फोटों से निर्दोषों का रक्त न बहा हो। गैर मुस्लिम बालिकाओं व युवतियों के शोषण ने तो जिहादियों को 'लव जिहादी' ही बना दिया। दुर्बलता का अनुचित लाभ उठा कर धर्मांधों ने धर्मांतरण से हिन्दुओं की भरपूर फसल काटी।

ऐसी विकट व विपरीत परिस्थितियों को झेल रहा राष्ट्रवादी समाज कब तक अपनी अस्मिता व अस्तित्व के लिए संघर्ष नहीं करता ? आज नहीं तो कल हमें अब अपने भलेपन के साथ–साथ बलवान बनना ही होगा। जब दुर्जन एकजुट हो सकते हैं, तो सज्जनों को एकत्रित होने से कौन रोक सकता है? हम 'अश्वमेघ यज्ञ' की परंपरा वाली भूमि की संतानें हैं, जहाँ सभी देवी–देवताओं के शास्त्र व शस्त्रों से सुजज्जित होने पर भी हमको अन्याय व अत्याचार सहने को विवश होना पड़ रहा है। हमारी सँस्कृति हमें पाप और पुण्य का भेद बताती है, साथ ही अधर्म पर धर्म की जीत का सन्देश देती है।

इसी पृष्ठभूमि ने 2014 एवं 2019 में लोकसभा के लोकतंत्र के चुनावी युद्ध में राष्ट्रवादियों ने अपनी शक्ति का भरपूर सदुपयोग किया। इस ऐतिहासिक विजय से देश को महानायक के रुप में एक सशक्त साहसी व कर्तव्यनिष्ठ शक्ति के उपासक श्री नरेंद्र मोदी के रुप में एक कुशल प्रशासक मिला; परंतु कुछ राज्यों में चुनावी गठबंधनों व कुछ षडयंत्रों के कारण राष्ट्रवादियों को चुनावी–युद्ध में पराजय मिली। फिर भी अपने कार्यकौशल से विश्व में राष्ट्र का खोया सम्मान पुनः स्थापित करके मोदी जी ने करोड़ों देशवासियों को अपनी प्रशासकीय योग्यता से मुग्ध किया। मोदी–शाह की जोड़ी में शक्ति के उपासक योगी आदित्यनाथ के जुड़ने से उत्तर प्रदेश के भगवामय होने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि करोड़ों देशवासियों ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप चुनावों में जो एक अहिंसात्मक युद्ध है, अपने–अपने शस्त्ररुपी मतों का सदुपयोग करके शक्ति को संजोया है।

यहाँ यह लिखना भी सार्थक होगा कि इस धर्मयुद्ध रुपी यात्रा में मोदी जी के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने वाले श्री अमित शाह जी की भूमिका किसी चाणक्य से कम नहीं रही। इस यज्ञ में आरंभ से ही जुड़े योगी जी की वर्षों की तपस्या और त्याग को भी भूलाया नहीं जा सकता। लोकसभा चुनाव के समय राष्ट्रवादियों ने एक नारा बुलंद किया था 'देश में मोदी–प्रदेश में योगी' जो आज चरितार्थ हो रहा है। आज 'माँ–भारती' के ये पुजारी करोड़ों देशवासियों की आशा के पुंज बन गए हैं। अतः हम अब शान्ति के लिए 'शक्ति' के उपासक बनें।

(राष्ट्रवादी चिंतक व लेखक),
गाजियाबाद

पश्चिम बंगाल के तीन प्रांतों में वाल्मीकि जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

सारे देश के साथ–साथ पश्चिम बंग के तीन प्रान्तों में बाल्मीकि जयन्ती कार्यक्रम 6, 7, 8, 9 अक्टूबर, 2025 तक 4 दिन अनुष्ठित हुआ। 8 अक्टूबर बुधवार को कोलकाता दक्षिण बंग प्रान्त कार्यालय में व्यापक कार्यक्रम हुआ। प्रान्त संगठन मंत्री श्री माणिक पाल, सह प्रान्त समरसता प्रमुख श्री सुनील शर्मा सहित अनेक कार्यकर्ता तथा नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कोलकाता क्षेत्र समरसता प्रमुख श्री गौतम कुमार सरकार ने विजयादशमी तथा महर्षि वाल्मीकि जी व समरसता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। भेदभावहीन समरस समाज निर्माण के लिए सभी को आगे आने का आह्वान किया। अंत में सभी को मिष्ठान वितरण किया गया।

मध्य बंग प्रान्त के आसनसोल जिला, जमुरिया में भव्य कार्यक्रम हुआ, बेहरामपुर ओर कालना, उत्तरबंग प्रान्त के मालदा के कार्यक्रम में वाल्मीकि भगनी को पुष्पमाला द्वारा सन्मानित किया गया।

स्वदेशी एवं स्वावलम्बन ही नये भारत का आधार

ललित गर्ग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना महोत्सव यानी प्रत्येक वर्ष विजयादशमी के अवसर पर संघ प्रमुख का उद्बोधन एक नए संदेश और नए दृष्टिकोण के साथ सामने आता है। इस उद्बोधन का पूरा राष्ट्र प्रतिक्षा करता है। इस बार संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कई ऐसी बातें कहीं, जो सरकार के साथ समाज के लोगों का ध्यान खींचने वाली हैं। इस पर आश्चर्य नहीं कि उन्होंने अपने संबोधन में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की ओर से भारत पर थोपे गए टैरिफ पर भी चर्चा की। 50 प्रतिशत अमेरिकी टैरिफ ने भारत के समक्ष जो कठिन चुनौती खड़ी कर दी है, उसका प्रभावी ढ़ंग से सामना स्वदेशी और स्वावलंबन की राह पर चलकर ही किया जा सकता है। भागवत ने संबोधन में स्वदेशी और स्वाबलंबन को नए भारत का आधार बताया है। उन्होंने कहा कि आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में परस्पर निर्भरता एक स्वाभाविक स्थिति है, लेकिन यह निर्भरता कभी भी बंधन या मजबूरी में परिवर्तित नहीं होनी चाहिए। भारत को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ना होगा ताकि विदेशी निर्णयों और नीतियों पर हमारी नियंत्रण क्षमता सीमित न हो जाए। उनका कहना था कि स्वदेशी का अर्थ यह नहीं है कि हम दुनियाँ से कट जाएँ, बल्कि यह है कि हम अपनी शर्तों पर और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार संबंध बनाएँ।

संघ की स्थापना का यह अवसर केवल एक उत्सव मात्र नहीं था, बल्कि यह आयोजन भारत की आत्मा और उसके भविष्य की एक गहन घोषणा थी। भागवत ने स्पष्टता और गंभीरता से अपने विचार रखे, भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में एक नया क्षितिज भी उद्घाटित किया। यह आयोजन संघ के सौ वर्ष सम्पूर्णता की साधना का मूल्यांकन ही नहीं, बल्कि आने वाले सौ वर्षों की दिशा का भी उद्घोष था। नई इबारत लिखते हुए भागवत ने स्पष्ट कहा कि संघ की कार्यप्रणाली का सार है, नए मनुष्य एवं सशक्त–स्वावलम्बी भारत का निर्माण। यह विचार सुनने में सरल लग सकता है; किंतु इसके निहितार्थ अत्यंत गहरे हैं। समाज और राष्ट्र की सारी समस्याओं का मूल व्यक्ति के भीतर छिपा है। इसीलिए देश के सभी वर्गों को एकसूत्र में जोड़ने के संकल्प के साथ संघ आगे बढ़ेगा, क्योंकि जब तक व्यक्ति का चरित्र, दृष्टि और आचरण नहीं बदलते, तब तक कोई भी व्यवस्था स्थायी रूप से परिवर्तित नहीं हो सकती। संघ व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज और राष्ट्र को बदलने की दीर्घकालिक साधना कर रहा है। यही कारण है कि संघ के कार्य का परिणाम केवल शाखाओं या कार्यक्रमों में नहीं मापा जा सकता, बल्कि उस अदृश्य लेकिन ठोस नैतिक शक्ति एवं सशक्त राष्ट्रीय भावना में देखा जा सकता है, जो धीरे–धीरे समाज की दिशा बदल रही है।

भागवत ने स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक दृष्टि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सॉंस्कृतिक और जीवन मूल्यों से भी जुड़ी हुई है। उन्होंने विविधता को भारत की विशेषता बताया और समाज में विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर चेताया। उन्होंने पंच परिवर्तन की संकल्पना भी

प्रस्तुत की जिसमें आत्मजागरूकता, पारिवारिक मूल्य, नागरिक अनुशासन और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को जोड़ा गया है। इस संदेश के सकारात्मक पक्ष अनेक हैं। यदि इसे गंभीरता से अपनाया जाए, तो यह देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को नई दिशा दे सकता है। स्थानीय उद्योगों, हस्तशिल्प और कृषि को बढ़ावा देने से रोजगार का सृजन होगा और आर्थिक आत्म-सम्मान मजबूत होगा। स्वदेशी पर बल देने से विदेशी निर्भरता घटेगी और देश की सुरक्षा व नीति संबंधी स्वतंत्रता बढ़ेगी। यदि समाज के स्तर पर भी इस सोच को अपनाया जाए तो उपभोक्तावाद के स्थान पर संवेदनशीलता और सेवा भाव विकसित होगा। विविधता के सम्मान और सामाजिक सद्भाव के आग्रह से राष्ट्र अधिक एकजुट और शक्तिशाली बन सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी जिस आत्मनिर्भर भारत का आह्वान कर रहे हैं, उसका मूल उद्देश्य केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है। यह संदेश देश की घरेलू क्षमताओं को सशक्त बनाने, आयात पर निर्भरता घटाने और स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ विकास की दिशा को व्यापक सामाजिक सरोकारों से भी जोड़ता है, जिसमें महात्मा गाँधी की 'स्वदेशी अपनाओ' और पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 'अंत्योदय' की परिकल्पना स्पष्ट तौर पर समाहित है।

स्वदेशी और स्वाबलंबन की राह पर चलकर ही नया भारत-सशक्त भारत का निर्माण किया जा सकता है। इस बात को सरकार भी रेखांकित कर चुकी है और अब संघ प्रमुख ने भी दोहरा दिया। यह समय की माँग है कि स्वदेशी और स्वाबलंबन पर तब तक बल दिया जाए, जब तक वांछित सफलता न मिल जाए। जहाँ सरकार को स्वदेशी की राह को आसान करना होगा, वहीं समाज को सहयोग देने के लिए तत्पर रहना होगा। इस उम्मीद में नहीं रहा जाना चाहिए कि अमेरिका के साथ शीघ्र ही आपसी व्यापार समझौता हो जाएगा। एक तो जब तक ऐसा हो न जाए, तब तक चैन से नहीं बैठा जा सकता और दूसरे यदि ऐसा हो जाए, तो भी भारत को स्वदेशी और स्वाबलंबन की राह पर चलना छोड़ना नहीं चाहिए। व्यापारिक साझेदारों पर निर्भरता लाचारी में नहीं बदलनी चाहिए। वास्तव में इस स्थिति से बचने का ही उपाय है स्वदेशी उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना; परंतु इस संदेश के साथ कई चुनौतियाँ और सीमाएँ भी जुड़ी हुई हैं। आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था आपस में इतनी गुँथी हुई हैं कि किसी भी देश का पूर्ण स्वाबलंबन व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है। अनेक तकनीकें और कच्चे माल अब भी हमें विदेशों से ही प्राप्त करने होते हैं। यदि स्वदेशी को बढ़ावा देने के नाम पर विदेशी व्यापार पर प्रतिबंध या अधिक शुल्क लगाए जाते हैं, तो यह व्यापार युद्ध और आर्थिक तनाव को जन्म दे सकता है। इस संदेश की सफलता केवल भाषणों और भावनात्मक नारों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि ठोस नीतियों, बजट, शोध और योजनाओं के आधार पर इसे अमल में लाना होगा।

सामाजिक दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि स्वदेशी और स्वाबलंबन का नारा केवल एक साँस्कृतिक या राजनीतिक रंग में न ढ़ल जाए। यह तभी कारगर होगा, जब इसे हर वर्ग, हर धर्म और हर क्षेत्र का सांझा लक्ष्य बनाया जाएगा। नागरिकों की आदतों और व्यवहार में बदलाव लाना आसान नहीं है, लेकिन यदि यह बदलाव शिक्षा, प्रोत्साहन और जनचेतना के माध्यम से लाया जाए, तो यह नारा समाज में गहरी जड़ें जमा सकता है। संघ प्रमुख का यह संदेश नए भारत की दिशा में प्रेरणा का स्रोत है। यह हमें बताता है कि हमें अपनी साँस्कृतिक और आध्यात्मिक शक्ति पर गर्व करना चाहिए, वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से सशक्त होना चाहिए और विश्व के साथ संवाद स्थापित करते हुए भी अपनी स्वायत्तता को बनाए रखना चाहिए। किंतु इसके लिए आलोचनात्मक विवेक, व्यावहारिक सोच और निरंतर समीक्षा की आवश्यकता है। आज विभिन्न देशों की परस्पर मित्रता का आधार अपने-अपने आर्थिक-कूटनीतिक हित हैं। इन स्थितियों में सर्वोत्तम उपाय स्वदेशी को बल देते हुए देश को आत्मनिर्भर बनाना है।

आज की वैश्विक परिस्थितियों पर दृष्टि डालें, तो भागवत के विचार और भी प्रासंगिक हो उठते हैं। दुनिया हिंसा, आतंकवाद, युद्ध और उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ से त्रस्त है। पर्यावरण संकट दिन-प्रतिदिन गंभीर होता जा रहा है। मानसिक तनाव और आत्मकेंद्रित जीवन-शैली ने मानव को भीतर से खोखला कर दिया है। इन परिस्थितियों में भारत ही वह देश है, जो एक वैकल्पिक जीवन-दर्शन दे सकता है। भारत के पास भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक समृद्धि की धरोहर है। यही धरोहर भारत को विश्वगुरु बनने की पात्रता प्रदान करती है। संघ की शताब्दी वर्ष की सम्पूर्णता का उद्घोष केवल संघ के स्वयंसेवकों के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश और विश्व के लिए एक संदेश है। यह संदेश है-स्वावलम्बी एवं स्वदेशी भावना को बदल देना, नए मनुष्य का निर्माण करना, गरीब को उठाना, धर्मों को जोड़ना, समाज में समरसता स्थापित करना और हिंदुत्व की व्यापक जीवन दृष्टि के आधार पर विश्व को दिशा देना। यह केवल भाषण नहीं बल्कि एक संकल्प है।

lalitgarg11@gmail.com

दीर्घ आयु प्राप्त करने का शास्त्र है आयुर्वेद

– मुरारी शरण शुक्ल (सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

जब तपश्चर्या, उपवास, अध्ययन, ब्रह्मचर्य, व्रत प्रभृति उत्तमोत्तम कार्यों में जीवन व्यतीत करने वाले पुरुषों में भी नाना प्रकार के विघ्नों को प्रकट करने वाले रोग उत्पन्न होने लगें, तो आयुर्वेद की सहायता आवश्यक होने लगती है। सभी प्रकार की साधना से शरीर दुर्बल और कृष होने लगता है, तब आयुर्वेद आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करता है। जब तपस्या करते हुए च्यवन ऋषि कृषकाय हो गए, तब वो आयुर्वेद की ओर अभिमुख हुए और च्यवनप्राश बनाया, जिसके सेवन से वो पुनः युवावस्था को प्राप्त हुए।

आयुर्वेद के ग्रन्थों में पुनर्नवा का वर्णन करते हुए लिखा गया है– शरीरं पुनर्नवं करोति इति पुनर्नवा। अर्थात् जरावस्था में चले जाने पर भी जो शरीर को फिर से नया अर्थात् युवा कर दे, उस औषधि का नाम है पुनर्नवा। गिलोय का सँस्कृत में नाम है अमृता, यह नाम स्वयं विवरण है कि यह स्वयं अमर रहने वाली औषधि है और इसके व्यवहार से समझ में आता है कि इसका सेवन करने वाले भी रोगों से मुक्त हो जाते हैं और अमरता के सदृश ही दीर्घायुष्य प्राप्त करते हैं। ऐसी केवल एक दो औषधियाँ नहीं हैं, आयुर्वेद में ऐसी औषधियों की विपुल सँख्या है, जो आपको दीर्घ जीवन देने में सक्षम हैं।

चरक संहिता में कहा गया है कि आयुर्वेद आयु का वेद है और परम पुण्य जनक है। यह शास्त्र मनुष्य के इहलोक और परलोक दोनों लोकों में हितकर है। यह अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों को देनेवाला है। आयुर्वेद का यथाविधि अध्ययन कर चिकित्सा करने से मनुष्य अनन्त पुण्य का भागी होता है। आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन करके जिस प्रकार मनुष्य दूसरों को आरोग्यप्रदान करता है, उसी प्रकार स्वयं भी नीरोग रहता हुआ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इस चतुर्विध पुरुषार्थ को प्रात करता है। "धातुसाम्यक्रिया चोक्ता तन्त्रस्यास्य प्रयोजनम्" अर्थात् शरीर, स्थित वात, पित्त, कफ, इन तीनों धातुओं तथा रस रक्त आदि सात धातुओं को समावस्था में रखना ही शास्त्र का प्रयोजन है। अर्थात् क्षीण हुई धातु को उपयुक्त औषध, आहार एवं विहार द्वारा बढ़ाना, स्वपरिमाण से बढ़ी हुई धातु को उपयुक्त औषध, आहार एवं विहार द्वारा घटाना और इस प्रकार धातुओं को परस्पर समावस्था में रखना ही वैद्य का कर्तव्य है।

स्वस्थ पुरुष में केवल समानोपयोग से धातुवृद्धि होकर धातुविषमता एवं केवल विशिष्टद्रव्य के उपयोग से धातुक्षय होकर धातुविषमता हो जाती है। अतः समान एवं विशिष्ट द्रव्य के युगपत् उपयोग से धातुसाम्यरूपा प्रवृति होती है। यह चिकित्सा का प्रयोजन है। यह नियम ही दिनचर्या, रात्रीचर्या एवं ऋतुचर्या का आधार स्तम्भ है।

एकवृत्ति जैसे– धृत अग्नि को बढ़ाने वाला है, अथवा धावन (दौड़ना) आदि कर्म वात को बढ़ाता है, आस्या (बैठे रहना) आदि कफवर्धक है। यहाँ पर घृत, धावन तथा आस्या आदि; अमि, वात तथा कफ आदि वर्धनीय के समान नहीं है, परन्तु प्रभाव से बढ़ाते हैं। घृतत्व, धावनत्व आदि ही प्रभाव शब्द वाच्य हैं। इनक समझने से रोगों को समझने में सहायता मिलती है। इन स्थितियों में परिवर्तन करने से, संतुलन करने से रोगों को बिना औषधि ही ठीक करने में सहायता मिलती है। इसलिए एकवृति को छोड़कर उभयवृति की ओर प्रवृत्त होना चाहिए, जिससे शरीर में रोग उत्पन्न ही न हों। साधना में एकवृति होने के कारण ही रोग उत्पन्न होते हैं। यही समस्या भ्रमणकारी महापुरुषों में भी होती है, उनके हर विषय में काम चलाने की प्रवृति एकवृति की हो जाने से वो व्याधिग्रस्त हो जाते हैं। उभयवृति का ध्यान रखने से रोगमुक्त हुआ जा सकता है।.

हिंदू समाज के पारंपरिक व्यवसायों को पुनर्जीवित करने का प्रेरक उपक्रम

'THE HINDU केश एवं सज्जा' का शुभारंभ

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर 2025। रोहिणी सेक्टर–15 स्थित मानव चौक पर 'THE HINDU केश एवं सज्जा' नामक एक अनोखे प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे जी के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। यह केंद्र विशेष रूप से हिंदू बालक–बालिकाओं को केश कला (हेयर स्टाइलिंग), सौंदर्य एवं शारीरिक सज्जा (ब्यूटी एवं ग्रूमिंग) जैसे व्यवसायों का प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इस पहल का उद्देश्य है–ऐसे परंपरागत व्यवसायों को पुनः हिंदू समाज के हाथों में स्थापित करना, जो कभी परिवारिक परंपरा का हिस्सा थे, परंतु समय के साथ समाज के हाथों से फिसल गए और अन्य समुदायों के नियंत्रण में चले गए।

श्री मिलिंद परांडे जी ने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि "हिंदू समाज की अनेक जातियाँ अपने पारिवारिक व्यवसायों में निष्ठा से जुड़ी थीं, परंतु उन्हें न तो उचित पारिश्रमिक मिला और न ही सम्मान। परिणामस्वरूप उनके बच्चे परंपरागत कार्यों से विमुख होकर नौकरियों की ओर आकर्षित हुए। ऐसे में यह उपक्रम अत्यंत प्रशंसनीय है, जो हमारे पारंपरिक कौशल और व्यवसायों को पुनर्जीवित कर हिंदू समाज को आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर करेगा।" इस अवसर पर प्रसिद्ध कथावाचक साध्वी समाहिता दीदी, हिंदू नेता सुश्री नूपुर शर्मा, विश्व हिंदू परिषद इंद्रप्रस्थ प्रांत मंत्री श्री सुरेंद्र कुमार गुप्ता, संगठन मंत्री श्री सुबोध जी, सह मंत्री श्री अशोक गुप्ता, धर्माचार्य संपर्क सह प्रमुख श्री रूपक शर्मा और प्रचार टोली सदस्य श्री राजेश जैन सहित अनेक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकर्ता, निवेदक के रूप में सुश्री शिल्पा अरोड़ा और सुश्री सिम्मा कोहली उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन श्री अतुल सिंहल ने किया।

'THE HINDU केश एवं सज्जा' का यह प्रयास केवल एक व्यवसायिक प्रशिक्षण केंद्र नहीं, बल्कि हिंदू आत्मगौरव, स्वावलंबन और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में एक ठोस कदम है।

फिजी में पांचवा राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन सम्पन्न

फिजी में छः वर्षों के उपरान्त, विगत 7 सितम्बर 2025 को हार्बर प्वाइंट कन्वेंशन हाल, लामी में यूनाईटेड हिन्दू स्ट्रांगर फिजी के थीम पर एक दिवसीय राष्ट्रीय हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में फिजी की अर्थव्यवस्था, सँस्कृति एवं शिक्षा में हिन्दू समाज का योगदान, हिन्दू समाज के समक्ष आ रही चुनौतियाँ एवं सामूहिक प्रगति के मार्ग निर्माण पर चिंतन और विमर्श किया गया।

भारतीय उच्चायुक्त सुनित मेहता ने उद्घाटन भाषण देते हुए कहा कि हिन्दू समाज ने फिजी के सामाजिक, सॉंस्कृतिक और आर्थिक पटल पर बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दुओं ने अपने सॉंस्कृतिक धरोहर और पहचान को भी बनाये रखा है। विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री स्वामी विज्ञानन्द जी ने होता (हिन्दू ऑर्गेनाइजेशन्स, टेम्पल्स एंड एशोसियेशन्स) फोरम का फिजी में शुभारम्भ किया। स्वामी जी ने जोर दिया कि सरकारी संस्थाओं के सहयोग से गरीबी उन्मूलन, सामाजिक असुरक्षा, सामाजिक विकास, ऑनलाइन सुरक्षा एवं सोशल मीडिया के दुरुपयोग से उपजे खतरों पर काम करना आवश्यक है। कार्यक्रम में अनेक हिन्दू संगठनों के कार्यकर्ता सहभागी हुए। कार्यक्रम से हिन्दू समाज में अत्यंत उत्साह का वातावरण सृजित हुआ।

अवैध धर्मांतरण के विरुद्ध कठोर कानून के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान घोषित

नई दिल्ली, 9 अक्टूबर 2025। निर्मोही आणि अखाड़ा, अखाड़ा परिषद व अखिल भारतीय संत समिति ने आज दिल्ली में 'धार्मिक स्वतंत्रता एवं धर्मांतरण' विषय पर एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया। इसमें देशभर का संत समाज ना सिर्फ धर्म स्वतंत्रता अधिनियम के पक्ष में पूरी तरह से लामबंद दिखा, अपितु इस बारे में एक देशव्यापी अभियान की घोषणा भी कर दी। देश की राजधानी दिल्ली में एक संयुक्त प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए निर्मोही आणि अखाड़े के अध्यक्ष व अखाड़ा परिषद के महामंत्री पूज्य श्री महंत राजेंद्र दास जी महाराज व अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री पूज्य स्वामी श्री जितेंद्रानंद सरस्वती जी महाराज ने कहा कि भारत की महानता इसकी विविधता में निहित है। यहाँ हजारों वर्षों से विभिन्न मत–पंथ, परम्पराएँ और संप्रदाय फल–फूल रहे हैं। इस विविधता का आधार धार्मिक स्वतंत्रता है। लेकिन आज यह स्वतंत्रता धर्मांतरण के रूप में एक गंभीर संकट का सामना कर रही है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का पालन और प्रचार करने की स्वतंत्रता है, लेकिन यह स्वतंत्रता लोक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य के अधीन है। प्रचार का अर्थ धर्मांतरण नहीं है, अनेक मामलों में माननीय न्यायपालिका यह निर्णय दे चुकी है। स्वतंत्रता के पश्चात देश में अनेक संतों और महापुरुषों ने अवैध धर्मांतरण को रोकने हेतु केंद्रीय कानून की मांग की। संविधान सभा में भी इस विषय पर चर्चा हुई, किंतु तत्कालीन सत्ताधारी दल का यह मानना था कि इस कानून को बनाने का अधिकार सिर्फ राज्य सरकारों को है। इसीलिए भारत के कई राज्यों–मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, ओडिशा, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि ने धर्म स्वतंत्रता अधिनियम बनाए। इन कानूनों का उद्देश्य आस्था का दमन करना नहीं, बल्कि छल–कपट, बल प्रयोग और प्रलोभन के माध्यम से धर्म परिवर्तन को रोकना है।

अब अवैध धर्मांतरण करने वाली शक्तियों व उनके समर्थकों ने इन संविधान सम्मत कानूनों को संबंधित उच्च न्यायालयों में चुनौती दी है, किन्तु दुर्भाग्य से माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इन सबको इकट्ठा कर एक साथ सुनवाई का आदेश दिया है। पूज्य संतों का मानना है कि राज्य सरकारों का विषय होने के कारण, उच्च न्यायालयों द्वारा निर्णय के पश्चात ही, इन मामलों में सर्वोच्च न्यायालय को विचार करना चाहिए। वैसे भी हर राज्य की परिस्थितियाँ अलग–अलग हैं, वहाँ के कानूनों का स्वरूप और उनका विरोध करने के आधार भी अलग–अलग हैं। इन सबको भला एक साथ कैसे सुना जा सकता है, ये बात किसी की भी समझ से परे है। वैसे भी मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति के संदर्भ में पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती जी की एक याचिका में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि ये राज्य सरकारों का विषय है, इसलिए इन सब मामलों को सर्वोच्च न्यायालय में एक साथ नहीं सुना जा सकता। धर्म स्वतंत्रता अधिनियम भी विविध राज्य सरकारों के ही विषय हैं, तो इन सबको एक साथ कैसे सुना जा सकता है, यह समाज के मन में संदेह निर्माण करता है।

उन्होंने कहा कि राज्यों द्वारा पारित धर्म स्वतंत्रता अधिनियमों के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय ने उन राज्यों से भी राय मांगी है, जहाँ के सत्ताधारी दल स्वयं धर्मांतरण के कुचक्र रचने वाली शक्तियों के साथ खड़े हैं। उन सबको भी एक साथ सुनना देश के चिंतकों के मन में शंका निर्माण करता है। इसी समय इन शक्तियों के साथ जुड़े कुछ कथित संविधानवेत्ता धर्मांतरण के संबंध में संविधान पीठ द्वारा स्थापित निर्णयों पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए दिखे। धर्मांतरण के पक्ष में अंतर्राष्ट्रीय षडयन्त्र पहले से ही सक्रिय हैं, जो अनेक बार उजागर हो चुके हैं। यह आशंका निर्मूल नहीं है कि हमारी न्यायपालिका भी कहीं इन षड्यंत्रों से प्रभावित तो नहीं हो रही! हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमारी न्यायपालिका की प्रतिष्ठा सुरक्षित रहे। संतों ने यह भी कहा कि आज की परिस्थियों की भीषणता को देखते हुए आवश्यक है कि अवैध धर्मांतरण को रोकने वाले कानूनों को और अधिक मजबूत किया जाए, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक सद्भाव व स्वधर्म पालन की स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित हो सके। हमारा न्यायपालिका से यह आग्रह है कि वह जिन राज्यों में ये कानून नहीं हैं, वहाँ बनाने के लिए राज्य सरकारों को आदेश दे और जहाँ ये कानून बने हुए हैं, वहाँ उनको कठोरता से लागू करने में सहयोग दे।

प्रेस वार्ता में विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन व अखाड़ा परिषद के प्रवक्ता पूज्य श्रीमहंत गौरी शंकर दास जी महाराज भी उपस्थित थे।

vhpintlhqs2@gmail.com

गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद की अखिल भारतीय बैठक

''भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद'' गोरक्षा विभाग–विहिप की तीन दिवसीय अखिल भारतीय बैठक 07 से 09 अक्टूबर, 2025 तक वीरों की पवित्र–पावन भूमि–**जयपुर (राजस्थान) में स्थित स्वामी लीलाशाह भवन, सेक्टर–28, प्रताप नगर, में अत्यन्त उत्साह** आनन्द के साथ सम्पन्न हुई। बैठक गोपूजन, गोस्तवन, गो–आरती, दीप प्रज्जवलन के साथ प्रारम्भ हुई। बैठक में **भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद'** ट्रस्ट के न्यासी, संरक्षक एवं क्षेत्र टोली के पदाधिकारी व देश के सभी प्रान्तों से ट्रस्ट के प्रान्त अध्यक्ष, प्रान्त मंत्री (ट्रस्ट मंत्री), प्रान्त कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख, सह प्रान्त गोरक्षा प्रमुख उपस्थित रहे। 40 प्रान्तों का प्रतिनिधित्व रहा, जिसमें से 156 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। **पूज्य स्वामी हरिदास वेदान्ती जी महाराज** ने उपस्थित होकर उद्घाटन सत्र की शोभा बढ़ाई।

उद्घाटन में माननीय दिनेश उपाध्याय जी (अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख) ने प्रस्तावना रखी। उन्होंने तीन दिन के सत्रों के विषयों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बैठक उद्घाटन से समापन सहित कुल 12 सत्रों एवं एक क्षेत्रशः बैठकें रहेंगी। राजस्थान का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाएगा। राजस्थान सरकार के पशुपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत द्वारा प्रदेश सरकार द्वारा योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत दी गयी। विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री मा. स्थाणुमालयन जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। तत्पश्चात भारतीय गोवंश रक्षण –संवर्द्धन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. गुरु प्रसाद सिंह जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया।

भारतीय गोवंश रक्षण – संवर्द्धन परिषद के महामंत्री मा. श्री नारायण अग्रवाल जी ने प्रतिवेदन रखा और गत वर्ष आयोजित बैठक की कार्यवाही संक्षिप्त में बतलाई। साथ ही आगामी वर्ष (2025–26) हेतु परिषद का बजट श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्वसम्मति से ॐ ध्वनि के साथ अनुमोदन किया गया। केन्द्र व प्रान्त से आए हुए शोक प्रस्ताव मा. शंकर गायकर जी द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे एक मिनट मौन रख कर मृत आत्मा को श्रद्धांजली दी गयी।

गोरक्षा विभाग के करणीय कार्य के विभिन्न आयामों का अखिल भारतीय अधिकारियों ने विचार और दिशानिर्देश दिए। मा. श्री नारायण अग्रवाल जी द्वारा गाय और गौशाला, श्री गोपालभाई सुतारिया ने कृषि प्रशिक्षण, मा. अजीत महापात्र जी गोसेवा गतिविधि के राष्ट्रीय संयोजक ने गोसेवा एवं गोविज्ञान परीक्षा पर प्रकाश डाला। श्री शैलेन्द्र सिंह जी अ. भा. गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख ने परीक्षा को सफल बनाने का संकल्प लिया। श्री केशव राजू (अखिल भारतीय सह गोरक्षा प्रमुख) ने संगठनात्मक, श्रीमती नंदिनी भोजराज (गोभक्त महिला प्रमुख) ने गोभक्त महिला के कार्य की जानकारी, श्री राजेन्द्र पुरोहित ने घरेलू गोउत्पाद प्रशिक्षण, श्री सोहन विश्वकर्मा ने गोउत्पादों की बिक्री व्यवस्था पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रज्ञान त्रिपाठी जी ने पंचगव्य चिकित्सा, श्री सुनील मानसिंहका जी ने गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, डा. रामस्वरूप चौहान जी ने पंचगव्य अनुसंधान का महत्व, डॉ. नरेश शर्मा जी (गोसम्पदा प्रचार–प्रसार प्रमुख) ने गोसम्पदा के विस्तार एवं आर्थिक तंत्र की मजबूती पर प्रकाश डाला। डॉ. गुरू प्रसाद सिंह जी ने सरकारी योजनाओं के बारे में, श्री लाल बहादुर सिंह जी ने गोउत्सव के संदर्भ में जानकारी दी।

विहिप के संयुक्त महामंत्री मा. स्थाणुमालयन जी ने संघ के शताब्दी वर्ष की योजना, पंच परिवर्तन एवं नशा मुक्ति पर विचार व्यक्त किये। जोधपुर के श्री निहाल जी ने गाय और शिक्षा के बारे में जानकारी दी। श्री शशांक शेखर जी (अखिल भारतीय विधि प्रमुख) ने गाय और कानून के बारे में जानकारी अवगत कराते हुए एक प्रस्ताव का वाचन किया, जिसे श्री जसराज श्री श्रीमाल (केन्द्रीय उपाध्यक्ष) एवं डॉ. विवेक शर्मा जी (केन्द्रीय मंत्री) ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

मा. दिनेश उपाध्याय जी ने करणीयकार्य संगठन की कल्पना ग्राम तक विस्तार, केन्द्र के ट्रस्ट के एक लाख के संरक्षक, प्रान्त के ट्रस्टों का आर्थिक स्वावलम्बन, गोसम्पदा के विज्ञापन व विस्तार, विभिन्न प्रशिक्षणों की व्यवस्था, पूर्णकालीन वृद्धि, आदि पर प्रकाश डाला साथ में जिज्ञासा समाधान भी किया।

मा. राष्ट्रीय अध्यक्ष गुरु प्रसाद सिंह जी ने डॉ. रामस्वरूप चौहान जी की घोषणा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पंजाब, हिमाचल, जम्मू–कश्मीर प्रान्तों के पालक की जिम्मेदारी दी गयी तथा श्रीमती सीमा पाण्डेय जी को पटना क्षेत्र का गोभक्त महिला प्रमुख की जिम्मेदारी दी गयी।

मा. गुरू प्रसाद सिंह जी द्वारा जयपुर प्रान्त के बैठक की व्यवस्था में लगे हुए सहयोगी कार्यकर्ताओं का परिचय एवं सम्मान किया गया। समापन सत्र में पूज्य प्रकाश दास जी महाराज ने देशभक्ति गीत से सभी कार्यकर्ताओं को उत्साहित किया। उसके बाद गोरक्षा विभाग के संरक्षक मा. हुकुमचन्द जी सांवला ने गोरक्षा–गोसेवा, गाय की महिमा व गाय से जुड़ने के संदर्भ में प्रेरणादायी एवं ओजस्वी मार्गदर्शन दिया। सभी कार्यकर्त्ताओं ने अत्यन्त जोश के साथ गाय की रक्षा का संकल्प लिया। अन्त में अध्यक्ष मा. गुरू प्रसाद सिंह जी ने सभी का आभार प्रदर्शन एवं धन्यवाद ज्ञापित किया, तत्पश्चात पूर्णता मंत्र एवं जयघोष के साथ बैठक विधिवत सम्पन्न हुई।

मसानी अम्मन मंदिर निधि से ऊंटी में रिसॉर्ट बनाने की योजना वापस

धर्मार्थ विभाग ने उच्च न्यायालय में दी जानकारी

चेन्नई, 15 मार्च। तमिलनाडु सरकार ने मद्रास उच्च न्यायालय को सूचित किया है कि वह मसानी अम्मन मंदिर निधि से ऊंटी में एक रिसॉर्ट बनाने की घोषणा वापस ले रही है। कोयंबटूर जिले के पोलाची में एक प्रसिद्ध मसानी अम्मन मंदिर है। इस मंदिर में भक्तों द्वारा अर्पित की गई 100 करोड़ रुपये की राशि बैंक में जमा है। ऐसे में खबर है कि धर्मार्थ विभाग ने उस राशि से 13.84 करोड़ रुपये लेकर ऊंटी के कंडल तालुका में सुब्रमण्यम स्वामी मंदिर के पास एक रिसॉर्ट बनाने का फैसला किया है। तमिलनाडु सरकार ने 24 दिसंबर को इस संबंध में एक सरकारी आदेश भी जारी किया था। कुडुवनचेरी के नंदीवरम निवासी भास्कर ने इसे रद्द करने की मांग करते हुए चेन्नई उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की है। यह याचिका मुख्य न्यायाधीश के.आर. श्रीराम और न्यायमूर्ति मोहम्मद शफीक की खंडपीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आई। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता पी. जगन्नाथ ने कहा कि तमिलनाडु सरकार ने उच्च न्यायालय के अन्य मामलों में दिए गए आदेश का उल्लंघन करते हुए एक आदेश जारी किया है, जिसमें कहा गया था कि मंदिर का धन केवल मंदिर के कल्याण कार्यों पर ही खर्च किया जाना चाहिए। इसलिए इस आदेश को रद्द किया जाना चाहिए। सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता जे. रविंधु ने भी कहा कि वह इस संबंध में रिसॉर्ट बनाने के आदेश को वापस ले लेंगे। न्यायाधीशों ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनीं। उन्होंने सरकार की दलीलें दर्ज कीं और मामला बंद करते हुए आदेश दिया।

murari.shukla@gmail.com

मंदिरों का धन देवता का, सरकार का नहीं

मंदिरों की दान राशि पर हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट का फैसला

- किस पर धन खर्च होगा, किस पर नहीं, कोर्ट ने यह भी बताया
- इन कार्यों में दान राशि का नहीं कर सकेंगे उपयोग
- सड़कों, पुलों और सार्वजनिक भवनों के निर्माण के लिए, जो सरकारों द्वारा बनाए जाने हैं, या जो मंदिर से जुड़े नहीं हैं
- किसी सरकारी कल्याणकारी योजना, निजी व्यवसाय या उद्योगों में निवेश दुकानें, माल या होटल चलाने के लिए
- मंदिर आयुक्त व मंदिर अधिकारियों के लिए वाहन खरीदने और मंदिर आने वाले वीआइपी के लिए उपहार खरीदने।
- चढ़ावे को सरकार के अधिकार में लेना भक्तों से विश्वासघात : कोर्ट।

शिमला। मंदिरों को दान राशि के उपयोग पर हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला दिया है। हाई कोर्ट ने मंदिरों को दान की धनराशि का दुरुपयोग रोकने के लिए व्यापक आदेश जारी किए हैं। कोर्ट ने बताया है कि यह धनराशि किस चीज पर खर्च की जाएगी और किस पर नहीं। साथ ही स्पष्ट किया कि मंदिर की धनराशि का उपयोग वेदों और योग की शिक्षा, मंदिरों के रखरखाव, पुजारियों को वेतन, वित्तीय सहायता, हिंदू धर्म के प्रचार–प्रसार आदि पर किया जाएगा। इस राशि का उपयोग उन सार्वजनिक भवनों, पुलों सड़कों आदि के निर्माण पर नहीं किया जाएगा, जो राज्य द्वारा बनवाए जाने हैं। न ही इस राशि का उपयोग मंदिर में आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों (वीआइपी) के लिए उपहार और स्मृति चिह्न खरीदने में होगा। कोर्ट ने कहा हमेशा याद रखना चाहिए कि देवता एक न्यायिक व्यक्ति हैं, धन देवता का है, सरकार का नहीं, ट्रस्टी केवल संरक्षक हैं और मंदिर के धन का कोई भी दुरुपयोग आपराधिक विश्वासघात के समान है।

यह ऐतिहासिक फैसला गत 10 अक्टूबर को न्यायमूर्ति विवेक सिंह ठाकुर व राकेश कैथला की खंडपीठ ने कश्मीर चंद शांघ्याल की जनहित याचिका पर दिया है। याचिका में हिंदू सार्वजनिक धार्मिक संस्थान और धर्मार्थ निधि अधिनियम, 1984 का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश मांगा गया था। याचिकाकर्ता ने दान राशि का विशेष रूप से बजट तैयार करने, खातों के रखरखाव व व्यय करने से संबंधित प्रावधानों के अनुपालन की मांग की थी।

मंदिरों की दान राशि के उपयोग पर हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा कि हिंदू धर्म की पृष्ठभूमि और इतिहास को ध्यान में रखते हुए अधिनियम की धारा 17 के अंतर्गत किए जाने वाले व्यय को समझना होगा। भक्तों द्वारा दान की गई राशि के व्यय के संबंध में याचिकाकर्ता की चिंता उचित है। भक्त मंदिरों को इस विश्वास के साथ दान देते हैं कि इससे देवताओं की देखभाल में सहायता मिलेगी। मंदिर स्थलों का रखरखाव होगा और सनातन धर्म का प्रचार होगा। जब सरकार इस चढ़ावे को अपने अधिकार में ले लेती है, तो वह विश्वासघात करती है। इस तरह का दुरुपयोग न केवल सार्वजनिक दान का दुरुपयोग है, बल्कि यह धार्मिक स्वतंत्रता और सँस्थागत पवित्रता के मूल पर प्रहार करता है। इसलिए मंदिर को दान में दी गई धनराशि का दुरुपयोग रोकने और इच्छित उद्देश्यों में उपयोग के लिए उसे रेगुलेट करना आवश्यक है। कहा कि अगर किसी ट्रस्टी ने मंदिर के धन का दुरुपयोग किया है, या दुरुपयोग करने का कारण बना है, तो उससे यह राशि वसूल की जाएगी। धन के दुरुपयोग के लिए वह व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होगा। हाई कोर्ट ने अपने निर्णय में 31 बिंदु बताए हैं, जिन पर इस धन का उपयोग किया जाएगा। कोर्ट ने कहा है कि इस राशि का उपयोग वेदों एवं योग की शिक्षा, अध्ययन और प्रचार के लिए बुनियादी ढांचा जैसे गुरुकुल तैयार करने व अन्य मंदिरों के रखरखाव में होगा।

(दैनिक जागरण से आभार)

murari.shukla@gmail.com

भोपाल–म.प्र. में बजरंग दल द्वारा भोपाल विभाग के शास्त्र एवं शस्त्र पूजन कार्यक्रम में
विहिप–बजरंग दल के प्रांतीय पदाधिकारी व कार्यकर्ता

हिंदू महिला फोरम एनजेड ने पूरे न्यूजीलैंड में करवा चौथ 2025 का उत्सव हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया

जयपुर (राजस्थान) में विहिप धर्मप्रसार विभाग द्वारा सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ किया गया

पश्चिम बंगाल के तीन प्रांतों में वाल्मीकि जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.10.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी